बाबा अनंत दास

(अंगिका महाकाव्य)

हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र'

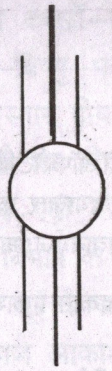

चन्द्रकांता प्रकाशन

कृति : बाबा अनंत दास

(अंगिका महाकाव्य)

कृतिकार : **हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र'**
ग्राम+पो0–कटहरा
सुलतानगंज (भागलपुर) 813213
मो0–9931854246

सम्प्रति : सेवा निवृत प्रधानाध्यापक
महामंत्री : अखिल भारतीय अंगिका साहित्य कला मंच

सम्पादक : अंगप्रिया / मंजिल/देवायतन

प्रकाशन तिथि : 2 अक्टूबर 2020 ई0
द्वितीय संस्करण–2022 ई0

सर्वाधिकार : ©

शब्द संयोजन, मुद्रण व आवरण : मोदी ऑफसेट प्रिंटर्स
आत्माबाजार, पहली मंजिल,
सुलतानगंज (भागलपुर)

प्रकाशक : चन्द्रकांता प्रकाशन

सहयोग राशि : **100/-**

BABA ANANT DAS
By *Hira Prasad 'Harendra'*

सच्चा मानौं

जम्बूद्वीप आरू आर्यावर्त के नाम सें विख्यात भारत भूमि आदिकाल सें हीं ऋषि–मुनि–ज्ञानी आरू साधु–संतों के भूमि रहलों छै। यहाँ देवी–देवता ही नैं, समय–समय पर ईश्वर के अवतार होलों ऐलों छै। जन–मानस में संतुलन बनैनें राखै लेली महात्माबुद्ध आरू महाबीर भारत के एक भाग बिहार में अवतरित होलों छै, तें बिहार के एक भाग में जे अंग देश के नाम सें जानलों जाय छै वहाँ बाबा अनन्तदास आरू महर्षि मेंहीं अहिनों सन्त अवतरित होय कें अंग के गौरव बढ़ैनें छै। बाबा अनन्त दास के जन्म क्षेत्र आरू कार्य क्षेत्र तें अंग क्षेत्र ही छेकै, मगर भ्रमण क्षेत्र अंग सें बाहर भी रहलों छै, जहाँकरों लोग इनकों सुधारवादी उपदेश सें पूरा लाभान्वित होलों छै।

आय प्रलय होय जाय। धरती के जड़–चेतन साथें आविष्कारिक, चमत्कारिक हर चीज विनष्ट होय जाय। ईश्वरी सत्ता के प्रभाव सें द्व–चार–दस सों योजन पर सृष्टि के संचालन लें एक–आध आदमी बची जाय। कहीं कोनों ग्रंथ दबलों–चपलों रही जाय। सृष्टिकर्त्ता, पालनकर्त्ता, संहारकर्त्ता ब्रह्मा–विष्णु–महेश–त्रिदेव के चक्र चलै आरू धरती पर फेनूँ मानव के विस्तार होय जाय। कहीं धरलों उसारलों किताब में पढ़ै के मौका मिलै कि बीसवीं सदी में लोहा के जहाज आकाशों में उड़ै रहै। ई सब पढ़ी के लोगों कें अन्धविश्वास रंग लागतै जेना रावण के पुष्पक विमान के वारै में शंका जतैलों जाय छै। जन–समुदाय सोचतै कि एगो सूई नैं पानी में तैरें पारें, नैं आकाशों में उड़ें पारें, भला लोहा के जहाज आकाशों में केना उड़तै। हमरा–तोरा आगू बितलों, आँखी देखलों सब सच गप्प रंग लागतै। ठीक वहीना अनन्त बाबा के चमत्कार अजबे रंग लागतै जेना घनघोर जंगल में बाघों पर सवार होय कें भ्रमण करना, गंगानदी पैदल पार करना, सौ कोश के दूरी घंटा भर में तय करना, गंगा माय सें घी–तेल भंडारा

लेली पैचों माँगना आरू फेनूँ वापस करी देना, ई सब लोगों कें गढ़लों गप्प लागतै, मगर अनन्त बाबा के ई सब करिश्मा आँखी देखलका लोग अभियो मौजूद छै। अनन्त बाबा तें खाली रास्ता बताबै कि महायज्ञ में उमड़लों भीड़ लेली भंडारा के व्यवस्था तेल–घीं बिना चरमराय छौ तें गंगा सें पैचा माँगी लान। भक्त गण जाय के गंगा से अर्ज करै आरू टीन भरी जल लें आबै। ऊ जल तेल–घी रंग लागै आरू ओकरे काम करै। ई देखलों आरू भोगलों सत्य कें कैसें कोय झुठलैतै। अनन्त दास के पुण्य तिथि उन्नीस नवम्बर उन्नीस सो सैतालिस के पूर्व उनका सें मिललों–जुललों व्यक्ति के अब तक होना भी कोय अनहोनी नै लागै छै।

गरम जल के झरना लेली मशहूर ऋषिकुण्ड के पावन भूमि के संत, अंगधरा धामों के गौरव बाबा अनन्त दास के स्मृति कें ताजा बनैनें राखै खातिर उनके भक्तगण के विशेष आग्रह पर जहाँ–तहाँ सें उनकों कथा–कहानी पढ़ी–सुनी प्रबंध काव्य के रूप में परोसै के हमरों प्रयास कहाँ तक सफल रहलै ई पाठक ही बतैतै। अनन्त बाबा के व्यक्तित्व के बखान में जे शब्द के प्रयोग करलियै कदाचित एकरा सें भी ज्यादा व्यक्त करै वाला कोय शब्द मिलतियै तें ओकरों प्रयोग करतियै, मगर ऊ शब्द ही नैं सूझै छै।

बाबा अनंत छेलै अनंत, कथा अगर जों गैबै,
उनकों बढ़िया उपदेशों कें, जीवन में अपनैबै,
हम्हूँ रोचक कथा–कहानी, अंगधरा धामों के
पढ़बै–गढ़बै–लिखबै आरू पाठक आगू ऐबै।

–हरेन्द्र

❖❖❖

।।समर्पण।।

बाबा अनन्त दास के परम सेवक,
नेपाली-घुघली-आमासी उच्च विद्यालय के संस्थापक
स्व० हरि प्रसाद मंडल औ अनन्तदास कुलोत्पन्न वैष्णवी
एवम् धर्मपारायण माता जागेश्वरी देवी के संतान,
सुयोग्य, कर्मठ, वाक्पटु, कुशल अध्यापक, समाज
सेवी, परोपकारी, आध्यात्मिक चर्चा आरू सत्संग प्रेमी,
देश के धार्मिक-स्थलों के दर्शनाभिलाषी आरू प्रकृति के
चितेरे श्री राजेन्द्र प्रसाद मंडल जी कें अपनों
प्रबंध काव्य के अष्टमपुष्प
''बाबा अनन्त दास'' समर्पित।

–हरेन्द्र

आभार

आयकों परिप्रेक्ष्य में अनुवाद एक अपरिहार्य सामाजिक आवश्यकता बनी गेलों छै। दिन पर दिन एकरों बर्चस्व बढ़लों जाय रहलों छै। अनुवाद के माध्यम सें खाली भाषा के अन्तरण नैं होय छै बल्कि संस्कृति के अन्तरण होय छै। यै लेली अनुवाद कें सांस्कृतिक राजदूत के भूमिका निभार्बे पड़ै छै। यै में कोय संदेह नैं कि अनुवाद के माध्यम सें भारतीय साहित्य आरू संस्कृति कें वैश्विक स्तर पर पहुँच आरू पहचान मिललों छै। विश्व साहित्य भी भारतीय भाषा में अनूदित छै। भारतीय भाषा के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान भी अनुवाद के माध्यम सें होय रहलों छै।

कन्नड़ भाषा–भाषी संतों के वचन अंगिका मॅ अनुवाद करलों ''वचन अंगिका'' देखलियै, पढ़लियै आरू चिन्तन–मनन करलियै। अनूदित करै वाला के श्रेणी में श्री हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र' के नाम देखी जे खुशी होलै, ओकरा शब्द में समेटना मुश्किल पड़ी गेलै। हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र' सें एक दसक के मेल–जोल उनका ऊपर कुछ भार दै लें मचली उठलै।

मोर्निंग वाक के बाद एक–आध घण्टा पेंशनर कार्यालय में बैठला पर जे 'हरेन्द्र' द्वारा विभिन्न विषय पर चर्चा सुनै छियै, ओकरों खुली कें प्रशंसा तें करथैं छियै साथें इनकों याददास्त कें भी दाद दै छियै। हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र' के वक्तव्य, गप–शप आरू बोलै के प्रभावपूर्ण शैली कें कसौटी पर कसला सें कसौटी के महत्व कम हुवें लागै छै।

सर्गबद्धता, छांदस विधान, रससृष्टि, भाव वैविध्य, भाषा गांभीर्य आरू उद्देश्य महनीयता के साथें रचलों कोय भक्तिभाव भरलों, कोय दलित आरू नारी विमर्श पर, कोय क्षेत्रीय महात्मा तें कोय लोक गाथा पर आधृत सात–सात प्रबंधकाव्य भी देखी चुकलों छियै। इनकों कार्य शैली आरू कार्य कुशलता सें प्रभावित होय कें हम्में आपनों लोभ कें सँवरण नैं करें पारलियै। जोंन अंग क्षेत्रीय ''महर्षि मेंहीं'' पर इनकों महाकाव्य देखलियै उनका सें सैंतीस–अड़तीस वर्ष पूर्व यही अंग के पावन धरती पर अवतरित बाबा अनन्त दास के व्यक्तित्व–कृतित्व पर 'हरेन्द्र' जी सें कुछ लिखवाबै के मोंन बनैलियै। 'हरेन्द्र' जी सहर्ष भार कें स्वीकार करलकै आरू परिणाम आज आगू में छै।

महर्षि मेंहीं बाबा सें सैंतीस–अड़तीस वर्ष पूर्व बरियारपुर (मुंगेर) के नजदीक कल्याण टोला में एक साधारण किसान परिवार में झौरी दास

आरू गंगावती देवी के पाँचवाँ पुत्र के रूप में बाबा अनन्तदास महाराज के अविर्भाव होलों छेलै। महापुरुष में जन्म के समय सें ही कुछ विलक्षणता लोगों कें झलकै लागै छै। कोय–कोय के माथा में जट्टा, कोय के मुँहों में बतीसो दाँत, कोय कें ठैहुना सें नीचें तक हाथ अद्‌भुत दृश्य प्रस्तुत करै छै, वही ना बाबा अनंत दास के ललाट में तिलक जैसनों रेखा माय–बापों कें कुछ सें कुछ सोचै लें बाध्य करै छेलै। पढ़ैलें पाठशला में नाम लिखैला पर–

''राम–नाम लड्डू गोपाल नाम घी,
हरिनाम मिसरी घोल–घोल पी।''

गीत गाबै वाला प्रल्हाद के तरह अलग कुछ धुन गैतें रहै छेलै। उनकों विवाह भी वाल्यावस्था में होय गेलों छेलै। द्विरागमन यानी गौना के समय हुनी दुनियादारी समझें लागलों छेलै। दाम्पत्य जीवन के जाल में नैं उलझी कें हुनी बैराग्य धारण करलकै। बाबा नैं तें तिलस्मी वाला नैं जादूगर छेलै आरू नैं तें तंत्र–मंत्र वाला छेलै, मगर असंभव कें संभव, अनहोनी कें होनी करी दै के क्षमता उनका में ईश्वर प्रदत्त छेलै। बाघ के सवारी करना, बाघ कें साथें रखना आरू ओकरा पैर के काँटों निकालना, हर तरह के समस्या के समाधान करना भंडारा लेली गंगा सें घी पैंचा माँगना, गंगा पैदल पार करना आदि विचारवान व्यक्ति के मन–मस्तिष्क में ही समैतै। उनका साथ घूमैवाला, रहैं वाला व्यक्ति सें ई सब कहानी हमरा सुनै के मौका मिललों छै, यै लेली कहानी वास्तविकता सें जुड़लों हम्में महसूस करै छियै।

बाबा अनन्त दास सें हमरों तीन पुस्त के करीबी सम्पर्क रहलों छै। हमरों बाबा त्रय (नेपाली, अमासी, घुघली) कें बावा के अनुयायी कहना अतिशयोक्ति नैं होतै।

जब श्रीराम जानकी गंगोत्री ठाकुरबाड़ी, साहेबगंज (नाथनगर) के निर्माण लेली बाबा में धुन समैलै, इलाका के गणमान्य लोगों सें मिली विचार–विमर्श के बाद चन्दा–चाटी करलों गेलै। चन्दा के पैसा गामों के प्रतिष्ठित व्यक्ति नेपाली मंडल के पास जमा करलों गेलै। जमा पैसा सें राम–जानकी नाम सें जमीन खरीदै के बात छेलै। कुछ अपरिहार्य कारण सें राम–जानकी नाम सें निबंधन संभव नैं हुवें पारलै। नेपाली मंडल अपना नाम सें निबंधन करबाय लेलकै। चार वर्ष तक ऊ जमीन के फसल कें भोगलकै। निबंधन के रास्ता साफ होला पर नेपाली मंडल चन्दावाला पैसा सें खरीदलों अठारह

बीघा आरू फसल के मुआवजा रूपों में चार बीघा, कुल बाइस बीघा जमीन श्रीराम–जानकी गंगोत्री ठाकुरबाड़ी, साहेबगंज के नाम सें निबंधन करी देलकै।

श्री राम–जानकी गंगोत्री ठाकुरबाड़ी के निर्माण लेली एक समिति के गठन होलै। संगठन के सक्रिय सदस्यों के रूपों में हरि मंडल के नाम आदर सें लेलों जाय छै। सौभाग्य के बात कि हम्में राजेन्द्र प्रसाद मंडल उनकों आत्मज अभी भी बाबा के भजन–भाव में लगलों–भिड़लों रहै छियै।

श्री हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र' जी अंगिका के चर्चित साहित्यकार छेकै। इनकों अथक प्रयास सें बाबा अनन्तदास अंगिका महाकाव्य के रचना सराहनीय छै। काव्य के विभिन्न कोटि के साहित्य में उल्लेख छै। आलोचक एकरा खण्डकाव्य, प्रबंध काव्य, सम्पूर्ण काव्य, महाकाव्य आदि नामों सें वर्गीकृत करनें छै। ग्यारह सर्ग में विभक्त ई महाकाव्य में विभिन्न छन्दों के प्रयोग होलों छै। पर्वत–पठार, गंगा–जलाशय, जंगली परिवेश, प्रकृति वर्णन, विभिन्न नक्षत्र–ऋतु, संभव–असंभव, तथ्यों के समावेश जहाँ तक काव्य के लक्षण बूझै–समझै छियै, वहाँ तक इनकों काव्य में पाबै छियै। हरेन्द्र जी गीतकार, गजलकार, कहानीकार, नाटककार, उपन्यासकार आदि के रूपों में जानलों जाय छै। दस साल सें अधिक के निकट सम्पर्क कोय व्यक्ति कें समझै में पर्याप्त अवसर प्रदान करै छै। मगर वहीं कठिनाई पैदा होय छै कि इनका बारें में कोन रेखा कें मोटों करी कें देखैयै।

बहुत कम व्यक्ति ऐसनों होय छै कि अपनाँ में कई ठो गुण समेटनें रहै छै। कई ठो गुणों कें अपनाँ में समैनें रखना हुवें पारें नैसर्गिक होतै, मगर ऊ सब में संतुलन बनैनें रखना वास्तविक में व्यक्ति के नीजी प्रतिभा छेकै।

हरेन्द्र जी रामायण, महाभारत आरू पुराणों के दबलों–चपलों, गड़लों तथ्यों कें लोगों के बीच परोसी कें बहुत कुछ सोचैलें बाध्य करी दै छै। सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी हरेन्द्र जी के साहित्य–साधना कें हम्में नमन करै छियै आरू चाहै छियै कि शताधिक वर्ष तक रचना धर्मिता के आपनों सत्प्रयासों सें साहित्य कें आरू समृद्ध करतें रहें। बाबा अनन्तदास, अंगिका महाकाव्य के रचना लेली हम्में आभार प्रकट करै छियै।

–राजेन्द्र प्रसाद मंडल
दुधैला (काली स्थान), सुलतानगंज (भागलपुर)
Mob.: 7661692152

हर सर्ग के निचोड़

पहला सर्ग	: भारत महिमा, भारत के प्रकृति, अंग के देवस्थान, विषय प्रवेश, चमत्कारी अनन्तदास।
दूसरा सर्ग	: अनंत बाबा के जन्म, जन्मस्थान, तिथि, पारिवारिक वर्णन, नामाकरण–ऐतबारी तबें ऐता, विवाह पत्नी चौरिया, ऐतादास के संन्यास ग्रहण करना, पत्नी पर प्रभाव, पति कें परमेश्वर मानी समय काटना।
तीसरा सर्ग	: प्रकृति प्रकोप, बाढ़ समस्या, ऋषिकुण्ड में डेरा, गुरू के दर्शन, चंचल बाबा के आशीर्वाद।
चौथा सर्ग	: जंगलवासी के बीच हैजा, बाबा द्वारा शांति, ऐतादास कें दीक्षा, नाम परिवर्तन अनन्त बाबा।
पाँचवाँ सर्ग	: ऋषि कुण्ड के महिमा, मलेमास में मेला, अनंत बाबा के बाघ सवारी।
छठा सर्ग	: बाबा के सवारी बाघ के निधन, माता–पिता गुरू के स्वर्गवास, देश–विदेश भ्रमण, बरियारपुर में ठाकुरबाड़ी, राधे साह के इलाज, झौबा बयिहार में यज्ञ, बुढ़वा दीरा में यज्ञ।
सातवाँ सर्ग	: अजगैवीनाथ दर्शन, आगू जाना परबत्ता, मल्लाह के आनाकानी, बाबा के पैदल पार होना, परबत्ता में यज्ञ, औरत के वार, बाबा के उपचार, औरत कुष्ट रोग सें ग्रसित, रूद्रयज्ञ, घी के अभाव, गंगा सें घी प्राप्त, क्षण भर में पीरपैंती सें ऋषिकुण्ड, बाबा सें राजेन्द्र बाबू के भेंट, आजादी के आशीर्वाद।
आठवा सर्ग	: ऋषिकुण्ड के महिमा, प्रकृति दृश्य, कुआँ के निर्माण, पानी के अभाव, कमलामहारानी की कृपा, मेंहीं दास सें मिलना
नौवाँ सर्ग	: ठाकुरवाड़ी लेली बाइसबीघा जमीन, बजरंगवली के करिश्मा, मंदिर लेली जमीन, मंदिर के निर्माण, यज्ञ भवन,
दसवा सर्म	: रामजानकी गंगोत्री ठाकुरबाड़ी में यज्ञ, राघोपुर में यज्ञ, महादेवा में ठाकुरबाड़ी, सुलतानगंजघाट के मल्लाह, बाबा पैदलपार, मल्लाह कें फेर, कालीमाय वैष्णवी, बलिदान पर रोक, बाबा द्वारा भंडारा, बाबा के स्वास्थ्य गिरना, पत्नी के हालत खराब, मिलन, बाबा हाथ से पानी पीबी स्वर्गवास।
ग्यारहवाँ सर्ग	: बाबा के रूग्नावस्था, पूर्णिमा के दिन देह त्याग, काशी के पंडित श्राद्धकार्य में, जमुनादास के महंथी, बाबा के उपदेश जीवन में उतारना।

❖❖❖

सर्ग–एक

जग में ज्ञान–किरण छिटकाबै,
सगरे जकरों छै सम्मान।
सब्भैं जानै, सब्भैं मानै,
हमरों भारत देश महान।। १।।

सिर पर मुकुट हिमालय शोभै,
नीचें जलधि पखारै पाँव।
यै बीचों में अस्सी प्रतिशत,
बसलों झलकै खाली गाँव ।।२।।

गामों के ई देश हमेशा,
बीचों में गंगा घहराय।
तीन तरफ़ सें तीन समुन्दर,
घेरी कें हरदम लहराय।।३।।

ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, काबेरी,
जमुना साथें कोसी, सोन।
सरस्वती चाहें बागमती,
कम लागै ककरा सें कोन।।४।।

नदी स्वर्णरिखा कें जानों,
करनें छै जे सोना दान।
सब्भै जानै, सब्भै मानै,
हमरों भारत देश महान ।।५।।

हमरों भारत भू पर झलकै,
घौनों जंगल कहीं पहाड़।
कहीं बाघ, मृग, भालू, चीता,
ओयझैं सुनों सिंह दहाड़।।६।।

देखैलें कन्हौं–कन्हौं, मिलथौं,
करिया बंदर, उजला मोर।
कौवा, मैना, बगुला, बगरों,
चातक कहीं मचाबै शोर।।७।।

हंस, कबूतर, चील, बाज छै,
सुग्गा केरों टेढ़ों लोल।
आमी के गाछी पें सुनभें,
कोयल के बोली अनमोल।।८।।

रंग–विरंगा तितली, भौंरा,
फूल्हौ के भरलों मुस्कान।
सब्भै जाने, सब्भै मानें,
हमरों भारत दो महान।।९।।

भारत देशों में शोभै छै,
कर्णो केरों अंग प्रदेश।
जौनें फैलैनें छै सगरे,
विश्व–बंधुता के संदेश।१०।।

रहै चित्ररथ राजा नामी,
रोमपाद हुनिये कहलाय।
चम्प नाम उनकों परपोता,
सुन्दर चम्पा नगर बसाय।११।।

जे चम्प के खानदानों में,
जन्मै अधिरथ नामक सूत।
उ पावै गंगा में पिटारी,
जै में सुतलों कर्ण सपूत ।१२।।

अधिरथ–राधा पालै–पोसै,
कोन्तेय राधेय कहलाय।
दुर्योधन जकरा माथा पर,
अंगों केरों तिलक लगाय।१३।।

कर्ण करै सावा मन सोना,
अपनों हाथें रोजे दान।
दानी अंगराज कर्णो के
करै छियै हम्में गुणगान।१४।।

सही अंग उत्तंग धरा पर,
करै अथर्व भेद भी गान।
ऐतरेय, गोपथ ब्राह्मण भी,
अंग–बंग सें नैं अनजान ।१५।

मधुसूदन, मंदार मथानी,
यहीं बसै छै चण्डी माय।
सुलतानगंज में अजगैबी,
भोला बसै देवघर जाय।१६।।

गोनूबाबा केरों महिमा,
बोली मनमा कहाँ अघाय।
साँप कटलका आबी–आबी,
लौटी हँसी–खुशी सें जाय।१७।।

ऋषि कुण्डों में ढेरी तपस्वी,
करनें ऐलै साधन–ध्यान।
मलेमास में ऋषि कुण्डों के,
मेलादेखी सब हैरान।१८।।

गंगा स्वरगो सें उतरी कें,
चललो धरती पर इठलाय।
अंग क्षेत्र में ऐथैं गेलै,
उनकों सब सुध–बुध भुतलाय।१९।

ऋषि जहनु रहै ध्यान लगैनें,
उनका सें गेली टकराय।
धारों साथें पोथी–पतरा,
सब्भे दै छै दूर भसाय।।२०।।

हलचल सें जब ध्यान टूटलै,
लेलक गंगा उदर समाय।
छटपट–छटपट करै भगीरथ,
आबें करियै कौन उपाय।।२१।।

सुनी भगीरथ केरों दुखड़ा,
मुनिवर गेलै कुछ घबड़ाय।
चीरी जंघा तुरत निकालै,
गंगा गेली तब शरमाय।।२२।।

ऋषि–मुनि केरों ई धरती पर,
समय–समय पर आबै सन्त।
ऊ संतों केरों श्रेणी में,
गिनती में छै दास अनंत।। २३।।

चमत्कारी अनंतदास के,
अंग क्षेत्र में पूरा नाम।
हुनकों गौरव गाथा अभियो,
चर्चा में छै ग्रामे–ग्राम।।२४।।

किवदन्ती के बात यहाँ नैं,
आँखी देखै वाला लोग।
अभियो तक मौजूद धरा पर,
एक यहों छेकै संयोग।।२५।।

महेन्द्र नारायण शरण लिखै,
ढेरी ऊ सज्जन के नाम।
जे बाबा के आगू–पाछू,
घूमी देखै अद्‌भुत काम।।२६।।

मूहाँमूहीं सुनलों गाथा,
उनका आगू में छै ढेर।
दूर–दराजों के नैं गप छै,
नैं यै में कुछ्छू अंधेर।।२७।।

अनुमानित इतिहास यहाँ नैं,
तोरों–हमरो घर के बात।
छन्दबद्धता के घेरा में,
लिखौं कथा जे छै विख्यात।।२८।।

अनंत बाबा अनंत छेल्हो,
कथा भला की होतै अन्त।
जों भटकौं तें राह दिखाबों,
मन–मंदिर में बसलों सन्त।।२९।।

❖❖❖

सर्ग–दू

सुलतानगंज अंग क्षेत्र के,
छै जग में विख्यात।
विश्वप्रसिद्ध श्रावणी मेला,
सावन भर दिन–रात।१।।

मुंगेरों के पावन धरती,
पूजों चण्डीमाय।
ऋषिकुण्डों के झर–झर झरना,
दै छै रोग भगाय।।२।।

ई तीनों जग्घों के बीचें,
गंगा के नजदीक।
बढ़िया गाँव कल्याण टोला,
जे अभियो रमनीक।।३।।

वै गामों में एक सितारा,
चमचम चमकै आय।
सुनलों जकरों कथा–कहानी,
यहाँ लिखै छी भाय।।४।।

आशा टोला, नयाछावनी,
नीरपुर एक गाँव।
महदेवा भी हाट लगै छै,
सटले वोही ठाँव।।५।।

अठारह सौ सैतालीस कें,
शुभ अक्टूवर माह।
वर्षा–पानी सें सबलोगें
पैनें छेलै थाह।।६।।

तारीख दू एतवार रहै,
बजलै बारह ठीक।
झौरी दासों के घर जन्मै,
बालक जे निर्भीक।।७।।

गंगावती दिखाबै सबकें,
बोलै झौरी दास।
बड़ी भाग्यशाली माता तों,
हमरा अब विश्वास।।८।।

पुत्र पाँचवाँ मातु–पिता के,
पंचतत्व के रत्न।
बालक केरों, सुख–सुविधा लें,
होतें रहलै यत्न।।९।।

बालक जखनी कानै छेलै,
भजन सुनाबै माय।
मुँह देखी–देखी मैया के,
बालक दै मुस्काय।।१०।।

बड़का भैया शुक्ल दास जी,
करै माय सें अर्ज।
नूनू केरों नाम धरै के,
हमरे छेकै फर्ज।।११।।

माता सुनथैं हर्खित होली,
छौ तोरो अधिकार।
तोरा सें बेशी नूनू कें,
के करनें छै प्यार।।१२।।

शुक्लदास नाचै–गाबै छै,
नूनू लें कें गोद।
मातु–पिता–परिजन के आँखी,
झलकै मंगल–मोद।।१३।।
शुल्कदास बोलै मैया सें,
दिन रहै एतवार।
'एतवारी' नाम राखै छी,
हमरों यहें विचार।।१४।।

गदगद होलै सब्भै के मन,
माता बड़ी निहाल।
उनका आगू में नित नाचै,
पाँच–पाँच ठो लाल।१५।।

ऐतवारी कहै में मैया,
जाय रहै भुतलाय।
ऐता कहना शुरू करलकी,
सोझों जरा बनाय।१६।।

संबत उनैस सौ चार रहै,
घर में परमानंद।
रेखा ललाट पर जब देखै,
माता मुस्कै मन्द।१७।।

एतवार दिन जन्मे खातिर,
राखै ऐता नाम।
शास्त्र मुताबिक रवि ग्रह छेलै,
पावन जिनको काम।१८।।
पड़े राशि वृष मंगलकारी,
देखै जब पंचांग।
ज्योतिष शास्त्री आगू झौरी,
गिरैं तुरत सांष्टाग।१९।।

ऐता ही विद्यालय में भी,
रखलों गेलै नाम।
प्रल्हाद रंग शुरू करलकै,
विद्यालय मे काम।।२०।।

सब चटिया कें रामनाम लें,
दै छेलै उसकाय।
खेल–खेल में सब्भैं गाबै,
भजन राम के भाय।।२१।।

पाठ पढ़ाबै गुरूजी जखनी,
ऐता जप्पै राम।
कहै राम जप्पों रे भैया,
बड़ा मनोहर नाम।।२२।।

कतनों डाँटै गुरुजी लेकिन,
ई नैं आबै बाज।
बदली गेलै ऐता केरों,
जीवन के सब साज।।२३।।

वर्ग तीसरा घीची–तीरी,
पढ़नें छेले भाय।
छप्पन सें तें हिनी चराबें
लगलै रोजे गाय।। २४।।

साथी साथें गाय चराबै,
जपै राम के नाम।
चरबांहा सब ताल मिलाबैं,
बढ़िया लागै काम।। २५।।

आध्यात्मिक, धार्मिक, दैविक सब,
भावो के रसधार।
जिनका अंदर बहतै
उनका खातिर सब्भे क्षार।।२६।।
झौरी दास पिता जब समझै,
बेटा केरों बात।
दुनियादारी में लिपटाबें,
सोचै तब दिन–रात।।२७।।

शादी करना बड़ा जरूरी,
सोचै यहें उपाय।
गंगावती सुनी कें चौकै,
मन गेलै चकराय।।२८।।
ग्राम मोहदीपुर में पक्का,
ठाम्हैं होलै बात।
नाथनगर अन्तर्गत छेलै,
गाँव बड़ा विख्यात।।२९।।

चम्मन दासों केरों बेटी,
रहै चौरिया नाम।
जकरा साथें विवाह केरों,
होलै पूरा काम।। ३०।।

नाम चौरिया जे तों बूझों,
रूप निहारी लोग।
सोचै मनमन कतना सुन्दर,
मिललों छै संयोग।।३१।।

खूब सजाबै सखी–सहेली,
चमकै सिनुरा लाल।
गौर वर्ण पर कारों भौवाँ,
कुमकुम, बिन्दी भाल।।३२।।

जूड़ा केरों फूल गुथलका,
गजरा जकरों साथ।
गोड़ों केरों पायल देखों,
पहुँची–कंगन हाथ।।३३।।

बारह बरसों में ही शादी,
चलन लगै अजगूत।
माय–बाप केरों बिरोध में,
बोलै कहाँ सपूत ।।३४।।

गंगा कें भी पूजै छेलै,
रोजे ऐतादास।
गाय–माल भी खूब अघाबै,
खाय–खाय कें घास।।३५।।

जब गौना के बात निकललै,
ऐता करै विरोध।
झौरी दासों के आँखी में,
झलकै छेलै क्रोध।।३६।।

मैया कें समझाबै ऐता,
देखें जरा ललाट।
हमरा खातिर ईश्वर केरों,
गेलै खुली कपाट।।३७।।

साधुवेश धारण करना छै,
छोड़ी घर–परिवार।
हम्में घर–परिवार बनैबै,
पूरा ई संसार।।३८।।

बात चौरिया देवी तक भी,
पहुँचाबै तत्काल।
सुनथैं देवी झूमें लगली,
चमकें लगलै भाल।३९।।

हमरों पति परमात्मा प्रेमी,
लेतै जब वैराग्य।
भक्तिभाव में लीन हमेशा,
ई हमरों सौभाग्य।।४०।।

थोडे दिन के बाद लाड़ली,
पुत्री केरों पास।
शादी केरों बात रखलकै,
सोची चम्मन दास।।४१।।

सुनी पिता के बात चौरिया,
आँखी भरभर लोर।
कहै पिताजी अर्ज सुनी लें,
कहै छिहौं करजोर ।।४२।।

दादी सदा बताबै छेली,
नारी केरों धर्म।
याद रखलियै तहिया सें ही,
हम्में सारा मर्म।।४३।।

अंधा, काना, लँगड़ा, लूल्हा,
कहिनों रहें अपंग।
प्रभु जोड़लकै नाता–रिश्ता,
जकरों जकरा संग।।४४।।

सुख–दुख में सब साथ निभाबों,
उत्तम यहें विचार।
अलग एकरा सें नैं हम्में,
पति जीवन के सार।।४५।।

मांग सजैलों उनके छेकै,
उनके सब शृंगार।
कैसें भूलौं बात पिताजी,
उनकों सब उपकार।।४६।।

पति हमरों संन्यासी बनलै,
बनलै पूरा संत।
उनका ही आगू में होतै,
ई जीवन के अन्त।।४७।।

बात बोलतें सावन–भादों,
अहिनों बरसै नैन।
टुक–टुक ताकै परिजन मुँह सें,
नै निकलै कुछ बैन।।४८।।

आगू पति परमेश्वर में ही,
रहै लगैनें मोंन।
व्यर्थ ओकरा आगू लागै,
सब संपत, सब धोंन।।४९।।

❖❖❖

सर्ग–तीन

प्रकृति सदा सें धरती के,
संतुलन बनाबै छै।
सब्भैं करनी करला के,
फल कें पाबै छै।।१।।

कभी आपदा कहनें बिन,
आबी आफत ढैथों।
कुहराम मचैनें सगरे,
लौटी फेनूँ जैथों।।२।।

बाढ़ समस्या सालों में,
देखै छी घर बैठी।
फसल लगलका आबी कें,
लै छै सब्भे ऐठी।।३।।

देखी क्षति जान–माल के,
पूरा लोर बहै छै।
खेल यहें नियति नटी के,
सब्भे लोग सहै छै।।४।।

ऐता दासों केरों घर,
गंगा में ही सटलों।
बाढ़ों केरों पानी में,
रहलै तइयो डटलों।।५।।

मगर बाढ़ के पानी में,
पूरा मन चकराबै।
गंगा जी के मनसा तें,
जरा समझ नैं आबै।।६।।

वर्षा सावन–भादों के
कौनें थाम्ही लेतै।
कोन चूक के दण्ड यहाँ,
आय विधाता देतै।।७।।

छोड़ी कें गाँव भागलै,
तरखों सब्भैं टेबै।
जरा ध्यान नैं खाहू के,
की–की कैसें लेबै।।८।।

ऐता दासो साथों में,
जंगल तरफें चललै।
अगल–बगल के पौधा सब,
गरमी पाबी गललै।।९।।

ऋषि कुण्डों लग आबी कें,
सब्भैं डालै डेरा।
सूरज छिपलै बादों में,
बढ़लै तब अंधेरा।।१०।।

डरतें देखै लोगों कें,
ऐता तब समझाबै।
ईश्वर केरों नाम जपै,
बैठी हरिगुण गाबै।।११।।

अट्ठारह सौ इकहत्तर,
ईस्वी छेलै तखनी।
चौबीस बरस के ऐता,
युवक कहाबै जखनी।।१२।।

सीताराम नाम के धुन,
होथैं रहै वहाँ पर।
गाय–माल केरों साथें,
ऐता रहै जहाँ पर।।१३।।

बड़ी अचानक एक दिनाँ,
मिललै एक महात्मा।
दर्शन पाबी ऐता के,
हर्खित होलै आत्मा।१४।।

खूब झुकी कें आगू में,
टेकै माथों जखनी।
हाथों सें संकेत करी,
आशिष दै छै तखनी।१५।।

ऐता दासों कें चिन्ता,
बाबा सें बोलै के।
अपना दिल के बात वहाँ,
चाहै छै खोलै के।१६।।

एक दिनाँ के बात यहें,
जेरों सें कुछ फूटी।
माल–मवेशी भटकी कें,
वन में गेलै छूटी।१७।।

सब्भे चरवाहा चिन्तित,
खोजै गांग–पहाड़ें।
पर सब कें भयभीत करै,
कखनूँ सिंह दहाड़ें।१८।।

ऋषि कुण्डों दिस खोजै लें,
ऐता चललों छेलै।
वहीं अचानक आगू में,
बाबा आबी गेलै।१९।।

जिनका खोजै में ऐता,
त्यागे अन्ने–पानी।
उनका ऐता लग भेजै,
ठाम्हैं शंभु–भवानी।।२०।।

आँखी में आँसू देखी,
बाबा के मन डोलै।
कानै के कारण बोलें,
बाब अपन्हैं बोलै।।२१।।

ऐता कहै सुनों बाबा !
गैया कुछ हेरैलै।
संध्या बेला जंगल सें,
लौटी कें नैं ऐलै।।२२।।

खोजै में सब विह्वल छी,
यहें दुक्ख छै भारी।
रास्ता कोय बतावों तें,
तों छेखो अवतारी।।२३।।

बाबा सब जानै छेलै,
मुस्काबै छै मनमन।
ऐता के दुख देखी कें,
बाबा बोलै तत्क्षण।।२४।।

'चम्पाकोल' तुरत दक्षिण,
जो तों बिना विचारे।
मेटी जैतौ जैथें ही,
जे दुख तोरा द्वारे।।२५।।

झाड़ी बीचे फसलों छौ,
जल्दी जाय निकालें।
भुखली छै आगू में तों,
खाहू लें कुछ डालें।।२६।।

दौड़ी पड़लै चरवाहा,
झटपट गाय निकालै।
हरा–भरा चारा आगू,
खाहू लें कुछ डालै।।२७।।

ऊ छेलै चंचल बाबा,
अगला दिन फिर मिललै।
ऐता दासों के मुख–पंकज,
मिलला सें कुछ खिललै।।२८।।

बाबा बोलै जल्दी तों,
अपनों घर सिधियाबें
घर वाला सें मिलीं–जुली,
खूबे मौज मनाबें।।२९।।

अगला दिन फेनूँ सब्भैं,
दूध दुही लें गेलै।
ई नाटक देखी बाबा,
तनियो खुश नैं भेलै।।३०।।

दूध जरा नैं स्वीकारै,
कहै मान समझाना।
पड़तौ जल्दी ही ऐजाँ,
तोरा कष्ट उठाना।।३१।।

बात सुनी कें बाबा के,
सब्भे घर सिधियाबै।
पर घर–द्वारी में इनका,
जरा चैन नैं आबै।।३२।।

एक दिनाँ दूध हाथ लें,
घर सें ऐता गेलै।
अबरी बाबा ऐता सें,
थोड़ा सा खुश भेलै।।३३।।

अतिशय रगड़ अनल निकलै,
हिम सें भी पढ़लों छै।
ईश्वर के मरजी लँगड़ा,
पर्वत पर चढ़लों छै।।३४।।

दूध ग्रहण कर खुशी–खुशी,
ऐता कें समझाबै।
बाबा के कहलों मानी,
लौटी कें घर आबै।।३५।।

भक्ति भाव में लीन सदा,
इनकों मन नैं मानै।
ऋषि कुण्डों केरों धरती,
अपनों दिस ही टानै।।३६।।

आधो राती उठलै झठ,
पहुँची गेलै जंगल।
चंचल बाबा कें देखी,
झलकै मंगल–मंगल।।३७।।

गिरै गोड़ पर बाबा के,
खुश छै चंचल बाबा।
ऐता दासों कें मिललै,
वैठैं काशी–कावा।।३८।।

❖❖❖

सर्ग–चार

आपदा एक पर एक यहाँ,
देखों आँख पसार।
हैजा, चेचक, प्लेग, जलजला,
सबके तीखा धार।१।।

ऋषि कुण्डों के अगल–बगल में,
बसलों ढेरी ग्राम।
पुरुषोत्तमपुर फनूँ जबायत,
पहाड़पुर छै नाम।।२।।

सब गामो में एक्खैबारी,
हैजा के आतंक।
कन्नें जैभें जान बचाबें,
सगरे दलदल पंक।।३।।

माल–मवेशी बाते छोड़ों,
गामे लागै शून्य।
काम न आबै दादाबाला,
खूब करलका पुण्य।।४।।

पचीस–तीस आदमी वहाँ,
चंचल बाबा पास।
सब्भे बारी–बारी बोलै,
अपनों दुखड़ा खास।।५।।

साहस सब्भै के चूर रहै,
आँखी भर–भर लोर।
लागै जेना कानी–कानी,
करनें सब्भैं भोर।।६।।

बाबा तोरों बिना कहाँ छै,
लोगों के कल्याण।
तोरों कृपा–दृष्टि सें संभव,
बचना सबके प्राण।।७।।

बाबा बोलै 'सुनें ध्यान सें,
मत घबड़ाबें कोय।
होनी होईये कें रहतै,
ई जानै सब कोय।।८।।

अपनाँ–अपनाँ घर कें लौटें,
राखी कें विश्वास।
कल सें लौटी जैतो गामें,
नया–नया उल्लास।।९।।

निकलै बाबा मध्य रात्रि में,
होलै बाघ सवार।
सब गामो में घूमी–घूमी,
रोग करलकै क्षार।।१०।।

लौटी बाघों पर सें उतरी,
बैठै आश्रम जाय।
थकलों छेलै बाघ जरा सा,
मन गेलै भर्राय।।११।।

धानों के क्यारी में बैठै,
होलै जहाँ बिहान।
चललों गेलै पहाड़ ऊपर,
जहाँ रहै सुनसान।।१२।।

ऐता दासें देखै छैलै,
बाबा केरों काम।
बैठी गेलों छेलै गाछी,
जखनी होलै शाम।।१३।।

बड़ी सबेरे ऐलै आगू,
बाबा उगलै आग।
हमरा तोरो नैं कुछ चाही,
ई फूहड़ अनुराग।।१४।।

जो जो, अपनों घर लौटी जो,
हठके करनें त्याग।
बाबा केरों आँखी छेलै,
क्रोधों केरों आग।।१५।।

घर पर आबी एक महीना,
रहलै ऐता दास।
बुढ़वा दीरा पैरू टोला,
छेलै घर के पास।।१६।।

बड़ी भयंकर हैजा उठलै,
मचलै हाहाकार।
दवा जरा भी काम न आबै,
सब लागै बेकार।।१७।।

चंचल बाबा लग सब चललै,
मन में करी विचार।
बाबा ही तें काटी फन्दा,
करतै बेड़ा पार।।८।।

सब लोगों के कथा सुनलकै,
दै कें पूरा ध्यान।
'सब्भे घर जो निश्चित होतौ,
सब्भै के कल्याण'।।१९।।

ऐता दास वही गाछी पर,
बैठै होथैं शाम।
लेतें रहलै रातो भर,
बाबा केरों नाम।।२०।।

बाघों पर बैठी कें बाबा,
बुढ़वा दीरा जाय।
घूमी–घूमी सब गामों सें,
देलक रोग भगाय।।२१।।

आश्रम आबी चंचल बाबा,
करलक कुछ आराम।
धन्य–धन्य महिमा बाबा के,
बड़ा मनोहर काम।।२२।।

भोरे उठथैं बाघों केरों,
देखै सब्भैं पैर।
हैजा सें तब मिललै राहत,
सबके होलै खैर।।२३।।

बड़ा सबेरे ऐता दासें,
पकड़ी लेलक गोड़।
बाबा के क्रोधों में पूरा,
आबी गेलै मोड़।।२४।।

बाबा प्यारों सें समझाबै,
घर में कर कुछ काम।
कहिनें जंगल में भटकै छें,
नितदिन सुबहो–शाम।।२५।।

बाघ, सिंह, जंगली जानवर,
खैतौ ले तों सोच।
आरू तोरा मन में की छौ,
बोलें नि:संकोच।।२६।।

कहिनें कान्हैं, की दुख तोरा,
बोली ले मुँह खोल।
ईश्वर नें जे तोरा देलक,
ऊ जीवन अनमोल।।२७।।

सास्टांग दण्डवत कर बोलै,
बाबा हमरों चाह।
शिष्य बनाबों, ज्ञान सिखाबों,
उचित दिखाबों राह।।२८।।

बाबा बोलै 'घर जो पहिनें,
करिहें उचित विचार।
मुक्त गृहस्थी–घर सें तोरा,
करतौ की परिवार।।२९।।

बाँकी छौ सब अभी चुकाना,
मातु–पिता के कर्ज।
साधु–संत बन दिवस गँवाना,
तोरों नैं छौ फर्ज।।३०।।

आज्ञा पाबी मातु–पिता के,
बाबा केरों पास।
बाबा केरों ध्यान लगैनें,
ऐलै ऐता दास।।३१।।

सास्टांग दण्डवत कर ऐता,
बाबा कें कर जोर।
बोलै बाबा शिष्य बनाबों,
काँपै कखनूँ ठोर।।३२।।

ऐता दासों सें खुश होलै,
बाबा चंचल दास।
दीक्षा दै लें तत्पर बाबा,
बोलाबै छै पास।।३३।।

ऋषि कुण्डों के महिमा बोली,
तब कहै करें स्नान।
उर्द्धपुण्ड तब तिलक लगाबै,
कहै करै लें ध्यान।।३४।।

राममंत्र दीक्षा प्रदान कर,
बाबा दै आसीस।
कहै भला तोरों अब करतौ,
परम पिता जगदीश।।३५।।

आजे तोरों जनम दूसरों,
बदली जैतौ काम।
'अनंत दास' राखलियौ हम्में,
आजे तोरों नाम।।३६।।

अनंतदास अभी सें होलैं,
घूमें बेपरवाह।
अनन्त ब्रह्म के उपासना ही,
धन्य–धन्य छौ चाह।।३७।।

तोरो अन्दर झलकौ हमरा,
भरलों की उत्साह।
सूरज आर्बे डूबें चललै,
पकडें घर के राह।।३८।।

एक पेड़ पर बैठी गेलै,
बगल्है में चुपचाप।
रात–रात भर जागी–जागी,
करै मंत्र के जाप।।३९।।

सूरज निकलै केरों पहिनें,
बाबा केरों पास।
पहुँचै छेलै ठीक समय पर,
भोरे अनन्त दास।।४०।।

गाछी पर बैठै वाला ई,
माह बीतलै तीन।
सदी बीसवीं केरों किस्सा,
नैं ज्यादा प्राचीन।।४१।।

एक रात गुरु चंचल बाबा,
गेलै बाघों पास।
बाघ करै संकेत वहाँ पर,
मतलब छेलै खास।।४२।।

बाघों पीठी सवार होलै,
पूछै बाबा बोल।
की कहना छौ कन्नें जैबें,
राज यहाँ पर खोल।।४३।।

पहुँची गेलै गाछी नीचें,
जैजाँ अनन्त दास।
ताकै ऊपर हुमड़ी–हुमड़ी,
तबें हुवै विश्वास।।४४।।

लेखक केरों माथा ठनकै,
काँपै दोनों हाथ।
रोचक बड़ी कहानी लागै,
सुनों धैर्य के साथ।।४५।।

'बेटा अनंत नीचें उतरें,
छोड़ें अब संकोच।
नैं कहियो डॉटै के तोरा,
लेनें छी मन सोच।।४६।।

नीचें जेन्हें अनन्त उतरै,
बाबा हृदय लगाय।
अन्दर गुफा चलै दोनों तब,
सिद्धी लेली भाय।।४७।।

वैराग्रों के शिक्षा दै कें,
तीर्थाटन उपदेश।
अनन्त बाबा बातो राखी,
घूमै देश–विदेश।।४८।।

मातु–पिता–गुरुवर के आज्ञा,
जौनें सिर पर धार।
अपनों जीवन सदा बितैतै,
उनकों बेड़ा पार।।४९।।

द्रोणाचार्य महा गुरुवर रङ्,
घातक छै अपवाद।
एकलव्य के कथा–कहानी,
सबकें होथों याद।।५०।।

परशुराम अहिनों गुरुवर कें,
जाति–धर्म के भेद।
कर्ण शिष्य के शापित होना,
सुनथैं होथों खेद।।५१।।

बापों के आज्ञा सें काटै,
माता केरों शीश।
ई कामों सें हृदयहीन जे,
उनखौ बरतै खीस।।५२।।

पिता वचन कें मानी गेलै,
राम तुरत बनवास।
ई बातों पर बोलों सोची,
ककरा नैं विश्वास।।५३।।

पर 'रामायण' केरो पन्ना,
उलटों बारम्बार।
'राम चरित मानस' कें खोली,
देखी लें संसार।।५४।।

राजा दशरथ कहिया बोलै,
रामों कें ई बात।
'जाओ, वन को जाओ, मानो,
आज्ञा मेरी तात'।।५५।।

कैकेयी रङ् माता चाही,
हृदय करै पाषाण।
भीतर–भीतर जलतें रहली,
झेली कें अपमान।।५६।।

निष्कलंकिनी कैकेयी के,
देखों अद्भुत काम।
राम चन्द्र कें वहीं बनाबै,
पुरुषोत्तम श्री राम।।५७।।

दुर्योधन तें खूब करलकै,
माता के सम्मान।
पर माता नैं देनें छेलै,
कभी विजय वरदान।।५८।।

पाँचो पाण्डव केरों पत्नी,
द्रुपदसुता कहलाय।
माता कुंती बिना देखनें,
बाँटै लें फरमाय।।५९।।

हरकामों में सोचों–समझों,
लगबों जरा विवेक।
नैं तें जंगल नसीब होथों,
होना जब अभिषेक।।६०।।

गंगा भोगै छै धरती पर,
आबी कें अभिशाप।
भले मिटाबै छै लोगों के,
जीवन के परिताप।।६१।।

मरै शिकारी के वाणों सें,
जग के पालनहार।
साधु–संत, ऋषि–मुनि गण केरों,
महिमा अपरंपार।।६२।।

❖❖❖

सर्ग–पाँच

तीर्थाटन गेलै बाबा, घूमै चारो धममा से,
भगति में मनमा रमाबै सोची–सोची कें।
द्वारिका, केदारनाथ, बद्रीका अयोध्या धामें,
वृन्दावन घूमी–फिरी आबै सोची–सोची कें।
प्रयाग तीरथराजें, घूमै सें नैं आबै बाजें,
त्रिवेणी में डूबकी लगाबै सोची–सोची कें।
कन्या कुमारी सागर संगम में नाही आबै,
रामेश्वर जाई हरसाबै सोची–सोची कें।१।।

चारो धाम घूरी बाबा, देखी आबै काशी–काबा,
रूपवा कें अनूप बनावै बाबा जानी लें।
बड़ों–बड़ों मूँछ–दाढ़ी, घूमी कें जंगल–झाड़ी
जटबा के लटबा देखाबै बाबा जानी लें।
ठैहुना सं नीचें हाथें, बालों लम्बा साथें–साथें।
अजानबाहु तें कहलाबै बाबा जानी लें।
रूपों–रंग मनोहारी, कामों–क्रोधें कें भी टारी।
घर–परिवारें कें भुलाबै बाबा जानी लें।।२।।
ऋषि कुण्डें गुरुवार, बसै छेलै वहीं गेलै,

जहाँ नित पाबै छेलै गुरु के सुरतिया।
चारो दिश खोजी मारै, नयना सें लोर ढारै,
काहीं नैं देखाबै छेलै, गुरु के सुरतिया।।
झरना जे झरै छेलै, वोहो तें उदास भेलै,
सबकें सुहाबै छेलै, गुरु के सुरतिया।
बाबा ध्यान करै जहाँ, गेलै खोजें वहाँ–वहाँ,
नजर न आबै छैलै, गुरु के सुरतिया।।३।।

कानै छै हक्कन पारी, लाल होलै आँख कारी,
उतरै पहाड़बा सें बाघ सुनों भइया।
अनंत दासों के लग, बाघ बैठै आबी झट,
अँसुआ बहाबै आँखी बाघ सुनो भइया।
बाबा ब्रह्मलीन होलें, साकेत सिधारी गेलै,
कहै छै इशरबा सें बाघ सुनों भइया।
पगड़ी से लोर पोछै, बाबा मनेमन सोचै,
लागै समझाबै छेलै बाघ सुनों भइया।।४।।

बाब सोची–सोची बोलै, मनमा के भेद खोलै,
कहाँ गेलै बाबा आबें बाबा के सवरिया।
बाबा के इशारा पाबी, बैठी गोड़ों लग आबी,
हुमड़ी–हुमड़ी देखैं, बाबा के सवरिया।
जंगल–पहाड़ कहै, बाघों के दहाड़ कहै,
साथें साथें रहें लागै, बाबा के सबरिया।
फल–मूल खाई–खाई, बाबा हरिगुण गाई,
सुख–दुख साथें झेलै, बाबा के सवरिया।।५।।
जागेश्वर दासें कहै, जे कि बाबा साथें रहै,

सुनी अचरज लागै, बाबा के कहानियाँ।
उठै–बैठे बार्घो साथें, दिन–दुपहरी रातें,
अंतर नैं कोनों बातें, बाबा के कहानियाँ।
झरना गरम जल, मेटी दै छै छल–बलें,
वही रे जंगहवा के बाबा के कहानियाँ,
मलेमास लागै जबें, ऋषिकुण्डें मेला तबें,
मेला में सुनाबै सब, बाबा के कहानियाँ।।६।।

सब्भे दिनाँ सोमवारें, जुटै लोग बाबा द्वारें,
धरम–करम भूमि, छेकै ऋषि कुण्डों के।
शरण में आबी–आबी, बाबा केरों गुणगाबी
महिमा पुरानों बड़ी, छेकै ऋषिकुण्डों के।
सन्त एकों पर एकें, पहुँचै छै माथा टेकें,
जड़ी–बूटी उपकारी छेलै ऋषिकुण्डों के।
अनंत बाबा के गाथा, अटै छै सब्भै के माथा,
बाब के सवारी बार्घे, छेकै ऋषिकुण्डों के।।७।।

❖❖❖

सर्ग–छह

उन्नीस सौ आठ ईस्वी में,
बाबा केरों बाघ सवारी।
जीवन सें नित लड़तें–लड़तें,
गेलै छोड़ी स्वर्ग सिधारी।।१।।

ग्यारह तक तें अनन्त बाबा,
करै तपस्या कुण्डों में।
बारह में घर आबी गेलै,
परिवारों के झुण्डों में।।२।।

तब तक झौरी दास पिताजी,
स्वर्ग सिधारी गेलों छै।
गंगावती कहाँ सें रहती,
स्वर्गे उनखौ भेलों छै।।३।।

चंचल बाबा केरों दर्शन,
इनका नैं होलों छेलै।
घर लौटी कें ऐतें–ऐतें,
मातु–पिता सब्भे गेलै।।४।।

मातु–पिता–गुरु साथें बाघो,
सबके करलक भंडारा।
लागै जेना सब कर्जा सें,
इनकों होलै निबटारा।।५।।

अठपहरा कीर्त्तन भी होलै,
बड्डी धूमों–धामों सें
एक्खैं बारी फुर्सत मिललै,
इनका सब्भे कामों सें।।६।।

तेरह ईस्वी में लौटै छै,
गामों दिस जंगल छोड़ी।
वैष्णव धर्म प्रचार करै में,
लै अपनों नाता जोड़ी।।७।।

तेरह में उँगराचक आबी,
ठाकुरबाड़ी बनबाबै।
बलदेव दास उँगरचाक के,
बाबा लग पहिनें आबै।।८।।

ब्रह्मलीन थोड़े दिन पहिनें,
हुनियों तें होलों छेलै।
अपनों परिजन–पुरजन बीचें,
जीवन जीवी कें गेलै।।९।।

उन्नीस सौ बीस ईस्वी में,
पैदल पुरी पहुँचलों छै।
इनका तें जंगल–पहाड़ सब,
रस्ता–पैड़ा खुचलों छै।।१०।।

आगू तब रामेश्वर गेलै,
पंडा जल नैं ढारें दै।
पूजा खातिर धूप–दीप सब,
लें गेलों नैं बारें दै।।११।।

करलक गुरु तपस्या बाबा,
पटे बन्द बिल्कुल होलै।
लाख लगाबै माथों पण्डा,
तनियों टा पट नैं डोलै।।१२।।

सपना दै रामेश्वर नाथें,
वैजाँ जे तप कर्त्ता छौ।
उनकों माया पहिनें समझें,
हुनिये कर्त्ता–धर्त्ता छौ।।१३।।

पंडा सब बाबा कें पकड़ै,
बोलै बाबा माफ करों।
मंदिर अंदर आबै–जाबै,
केरों रस्ता साफ करों।।१४।।

मँगबाबै सावा मन लड्डू,
रामधुनी करबाबै छै।
तब बाबा अपना हाथों सें,
मंदिर खोलें आबै छै।।१५।।

जय–जय–जय बाबा रामेश्वर,
तोरों महिमा न्यारी छै।
सब देवों के देव कहाबै,
ई भोला भंडारी छै।।१६।।

ई सब यात्रा देशों केरों,
सटलों देश नेपाल छै।
पशुपति नाथों दर्शन लेली,
बाबा बड़ी बेहाल छै।।१७।।

ईस्वी तैस शुरू फागुन में,
नेपाले बाबा गेलै।
पशुपति नाथों केरों दर्शन,
कर बाबा पुलकित भेलै।।१८।।

महारूद्र यज्ञों करवाबै,
कीर्त्तन, रामधुनी, साथें।
मंदिर बड़ा भव्य बनबाबै,
कहीं–कहीं अपनाँ हाथें।।१९।।

रामचन्द्र शिव मंदिर मिललै,
बाबा कें तब दानों में।
नेपाली कुछ कसर करै नैं,
बाबा के सम्मानों में।।२०।।

साईनबोर्ड जे लगबाबै,
कहिनों छै अब पता कहाँ।
भक्त जनों कें सदा सुनाबै,
बाबा गोलै जहाँ–जहाँ।।२१।।

नेपालों सें लौटी बाबा,
अपनों आश्रम में आबै।
धर्म–कर्म के बात निराली,
अनुयायी कें समझाबै।।२२।।

हुक्का पीना बन्द कराबै,
जाल जराबै मछुआ के।
सबकें पूरा गरियाबै जे,
हाड़ चिबाबै कछुआ के।।२३।।

मछली–मांसो, दारू–ताड़ी,
घूमी–घूमी कें रोकै।
जे पाखण्डी, धर्म विरोधी,
तनियों नैं बाबा टोकै।।२४।।

ऋषि कुण्डों सें घुमै–फिरै लें,
बाबा गामों में आबै।
मान–भाव पूरा पाबी कें,
बाबा पूरा हरसाबै।।२५।।

सोचै तब बरियारपुरों में,
बनबाबें ठाकुरबाड़ी।
सड़क किनारें अपनाँ हाथें,
साफ करै जंगल–झाड़ी।।२६।।

एक झोपड़ी मंदिर अहिनों,
मेहनतों सें बनवाबै।
वै में छोटों–छोटों मुरती,
पूजा लेली बैठाबै।।२७।।

एक बरस तक अनंत बाबा,
वैठाँ समय बिताबै छै।
राधे साह नाम के सेवक,
एक अचानक आबै छै।।२८।।

करै आरजू–विनती पूरा,
गोड़ों पर माथा पटकै।
छेलै परेशान बेचारा,
दुख–तकलीफों सें भटकै।।२९।।

बाबा पूरा सुनै कहानी,
दै छै भस्म लगाबै लें।
मंत्र पढ़ी कें जल पीयैलें,
दै छै रोग भगाबै लें।।३०।।

तीन महीना होतें–होतें,
रोगी होलों छै चंगा।
कहों प्रेम सें हर–हर गंगा,
कहों प्रेम सें हर गंगा।।३१।।

ढाई साल रोग नैं लौटै,
राधे बाबा सें बोलै।
मंदिर खातिर जग्घों दै के,
बाते बाबा लग खोलै।।३२।।

बाबा बोले लिखा–पढ़ी तें,
पहिनें ही होतौ मानें।
आगे वै पर तोरों कब्जा,
कहियो नैं होतौ जानें।।३३।।

लिखा–पढ़ी होला के बादे,
काम शुरू जखनी होलै।
राधे साहों के परिवारें,
बात जरा टेढ़ों बोलै।।३४।।

बन्द कराबै कामों आबी,
कहै बनाना बन्द करें।
पहिनें बँटवारा करना छै,
हिस्सा अखनी जल्द करें।३५।।

बाबा सोचै मानवता के,
हास अभी छै लोगों में।
धर्म–कर्म सब भूली गेलै,
लागी गेलै भोगों में।।३६।।

अनशन पर बैठे छै बाबा,
पाँच दिना रहलै भुखलों।
देह–दशा गललों गेलै नित,
अन्न बिना लागै सुखलों।।३७।।

पर नैं राधे साहों केरों,
डोलै छै कुछ घरवाला।
घुमै–फिरै आगू में आबी,
लागै जेना मतबाला।।३८।।

बाबा सोचै 'अब दुनिया में,
बेकारे हमारों जीना।
ईश्वर भी नाराज लगै छै,
अच्छा छै मुँह कें सीना।।३९।।'

लकड़ी फाड़ी करै इकट्ठा,
चिता सजाबै हाथों सें।
हरिश्चन्द्र वाला किस्सा भी,
नैं निकलै छै माथों सें।।४०।।

खरीद्दार नैं हरिश्चन्द्र कें,
काशी में मिललै जखनी।
जीवन जीना व्यर्थ लगै छै,
चिता सजाबै छै तखनी।।४१।।

उलटा सूरज ऊपर चढ़लै,
हरिश्चन्द्र कें बचबै लें।
सूत्रधार तें ईश्वर छेकै,
जीव–जीव कें नचबै लें।।४२।।

बाबा केरों चिता सजलका,
सब लोगों कें झलकै छै।
उमड़ें लगलै भीड़ वहाँ पर,
सबके छाती दलकै छै।।४३।।

साहों के परिवारों सबकें,
पकड़ी–पकड़ी लानै छै।
चिता सजलका पर फेकै के,
बाते सब्भे ठानै छै।।४४।।

राधे साह गला में गमछी,
डाली कें कर जोड़ै छै।
उमतैलों लोगो जे छेलै,
सबनें सबकें छोड़ै छै।।४५।।

बाबा के आशीर्वादों सें,
खतम हुवै सब्भे झगड़ा।
ई तें राधे परिवारों के,
झलकै छै सबकें रगड़ा।।४६।।

मंदिर के निर्माण करै में,
सब्भैं जोर लगाबै छै।
बाबा के सुन्दर कामों सें,
जनता सब हरसाबै छै।।४७।।

उन्नीस सौ बीस ईस्वी में,
मंदिर जब पूरा होलै।
मूर्ती भव्य मनोहर चाही,
जनता आबी कें बोलै।।४८।।

राम–जानकी–लक्ष्मण साथें,
हनुमानों बैठाबै छै।
प्राण–प्रतिष्ठा धूम–धाम सें,
विधि पूर्वक करबाबै छै।।४९।।

एकवार ऋषिकुण्डों में जब,
भंडारा करबावै छै।
भंडारा में लोग हजारों भोजन,
पार्बे आबै छै।।५०।।

जमुना दास रहै बाबा लग,
देखी कें घबड़ैलै तब।
कैसें पुरतै सबकें भोजन,
कहनें–कहनें ऐलै तब।।५१।।

बाबा डाँटै छै जोरों सें,
सब्भे होतै जानी लें।
माय जोगिनी सवालाख सब,
पूरा करतै मानी लें।।५२।।

खैतें–खैतें लोग अघैलै,
नैं भंडारा खाली छै।
बाग उजड़तै कैसें कोनों,
रखवाला जब माली छै।।५३।।

ऐलों–गेलों साधु–संत सब,
देखी बाबा के माया।
सब्भैं सोचै बाबा ऊपर,
छै ईश्वर केरों साया।।५४।।

बाबा के देखी कें लीला,
गौवाँ हर्ष मनाबै छै।
बाबा कें अपना गामों में,
आबी कें बोलाबै छै।।५५।।

बाबा पहुँचै गाँव जखनियें,
जोरों सें झांझ बजाबै।
घर के सब्भे कामे छोड़ी,
दौड़ी झट सब्भे आबै।।५६।।

बाबा के आशीर्वादों सें,
पड़लों जे काम अधूरा।
बाबा कें अकबाली मानों,
सब्भें के होलै पूरा।।५७।।

बाबा केरों जन्म–भूमि पर,
गेलै कुछ ध्यान जखनियें।
पूजा कर प्रसाद पाबी कें,
चललै घोंर तखनियें।।५८।।

नर–नारी, बच्चा–बूढ़ों सब,
दौड़ी–दौड़ी आबी कें।
चरण–धूल मस्तक पर रगड़ै,
बाबा के गुण गाबी कें।।५९।।

गंगा तट पर बाबा गेलै,
मनसा यज्ञ कराबै के।
रामधुनी सत्संग वहाँ पर,
हरिगुण कुछ दिन गाबै कै।।६०।।

झौवा बयिहार निकट छेलै,
जे बयिहार तीन सहिया।
बढ़िया काम भला ऊ वन में,
कैसें कें करतै कहिया।।६१।।

गंगा यज्ञ अनुष्ठान वहाँ,
ठानी जब लै छै बाबा।
सबलोगों कें झलकें लगलै,
वोही ठाँ काशी–कावा।।६२।।

यज्ञ कार्य तें पूरा होलै,
मुरती ढेरी बैठाबै।
झौवा बयिहारों में तखनी,
मंदिर सुन्दर बनबावै।।६३।।

तखनियें जे कल्याण टोला में,
मंदिर बनबैनें छेलै।
संतावने साल बाढ़ में,
गंगा पेटों में गेलै।।६४।।

ऋषि कुण्डों में जाप करै में,
बाबा समय बिताबै छै।
तखनी बुढ़वा दीरा केरों,
लोग वहाँ पर आबै छै।।६५।।

ऊ दीरा में यज्ञ करै के,
सब्भैं हठ कें ठानै छै।
बाबा रहै उदार तुरन्ते,
बातो सबके मानै छै।।६६।।

बाबा पहुँचै बुढ़वा दीरा,
सबमें छेलै खुशहाली।
लागै बाबा साथें ऐलै,
माँ दुर्गा, लक्ष्मी, काली।।६७।।

राम लौटलों लगै अयोध्या,
जैसें की बनवासों सें।
फूलों के वर्षा भी लागै,
हुवै रहै आकाशों सें।।६८।।

घर–परिवारो, गाँव–मुहल्ला,
देखी कें गदगद छेलै।
सब्भै केरों मुख–मंडल पर,
हँसी–खुशी नाचै–खेलै।।६९।।

यज्ञ कार्य सम्पन्न करावै,
खूबे धूमों–धामों सें।
जय–जयकार करै बाबा के,
सब खुश बाबा कामों सें।।७०।।

सर्ग–सात

जकरों अंतिम काल में,
नाड़ी पहुँचै काँख।
संभव छै कल्याण जब,
मैया खोलै आँख।।१।।

गंगा मैया सगर सुत,
तारै साठ हजार।
शापों सें होलों रहै,
जे धरती पर क्षार।।२।।

भक्तों केरों माय नित,
करनें छै कल्याण।
धार्मिक सब्भे ग्रंथ में,
अंकित ढेर प्रमाण।।३।।

ऋषिकुण्डो बरियारपुर,
सें पूरव के ओर।
सुलतानगंज पहुँचलै,
बाबा भोरे–भोर।।४।।

अजगैबी कें पूजनें,
बड़ा धैर्य के साथ।
बाबा अनन्त दासजी,
पहुँचै बूढ़ानाथ।।५।।

कुच्छू क्षण वैठाँ रूकै,
बाबा अनन्त दास।
परबत्ता तक पहुँचना,
मतलब छेलै खास।।६।।

परबत्ता में यज्ञ के,
आयोजन अनमोल।
बाबा जब नैं पहुँचतै,
कैसें बजतै ढोल।।७।।

बूढ़ानाथों के निकट,
छै आदमपुर घाट।
माँझी–मल्लाहा वहाँ,
दिखलाबै छै डाट।।८।।

बाबा बोलै आज तों,
कर हमरा ऊ पार।
पर नैं माँझी एक भी,
होलै जब तैयार ।।।९।।

बाबा नैं घबड़ाय छै,
नैं दिखलाबै क्रोध।
मल्लाहा सबकें कहै,
तों सब निरा अवोध।।१०।।

भगवानें तोरों करौ,
जो बेटा कल्याण।
तों नैं सिखलें केकरों,
करना कुछ सम्मान।।११।।

बाबा गंगा में चलै,
गोड़ें पहन खड़ाम।
दर्शक टुकटुक देखतें,
रहलै इनकों काम।।१२।।

पैदल बाबा करलकै,
गंगाजी कें पार।
घाटों पर ऊ वक्त तें,
छेलै भीड़ अपार।।१३।।

झौरी माँझी हाल तक,
कथा सुनाबै भाय।
बाबा केरों भक्ति में,
दर्शक मोंन रमाय।१४।।

बाबा परबत्ता पहुँच,
देलकै झाँझ बजाय।
सेवक सेवा में लगै,
बाबा के गुण गाय।१५।।

यज्ञ कार्य पूरा करै,
मेटै सबके पीर।
यज्ञ कराबै में रहै,
बालदेव, रघुवीर।१६।।

आखारों के पूर्णिमा,
यज्ञ कार्य सम्पन्न।
कोनों भी वाधा वहाँ,
नैं होलै उत्पन्न।१७।।

पंडित भोजन दक्षिणा,
पाबी कें हर्षाय।
कीर्त्तनियाँ सब भाव सें,
बाबा के गुण गाय।१८।।

बाबा अहिनों आदमी,
पर जादू के खेल।
करनें बिन छोड़ै कहाँ,
नैं दै ककरो सेल।१९।।

बाबा कें चौअन्नियाँ,
शंकरपुर के लोग।
मंत्रित वाणों सें करै,
विह्वल ई संयोग।।२०।।

देखी कें बेचैन जब,
सब गेलै उमताय।
बोलै के छेकै कहों,
झट लेबै फड़ियाय।।२१।।

नैं रहतै ऊ भूमि पर,
नैं करतै उत्पात।
तोरों ई तकलीफ सें,
आग लगै छै गात।।२२।।

बाबा बोलै सब यहाँ,
करनी के फल पाय।
जैतै निश्चित लोक ऊ,
जानी लें सब भाय।।२३।।

बाबा बोलै गोड़ में,
काँटी छौ अनुमान।
ताकतन्नाला आदमी,
आबी पकड़ी टान।।२४।।

करना चाही आपन्हैं,
पर हम्में लाचार।
बिल्कुल असह्य दर्द के,
सहना मुश्किल भार।।२५।।

ऐलै ठाम्हैं आदमी,
जकरों हृदय कठोर।
दाँतों सें काँटी पकड़,
खूब लगाबै जोर।।२६।।

काँटी बाहर निकललै,
बाबा केरों संग,
जत्तें छेलै आदमी,
सब्भे होलै दंग।।२७।।

औरत जे करनें रहै,
बाब देहें वार।
कुष्ट रोग सें ग्रसित ऊ,
देखलकै संसार।।२८।।

रूद्र यज्ञ ऊ जगह पर,
लै छै बाबा ठान।
मिललै वै में सफलता,
जकरों नैं अनुमान।।२९।।

ग्यारह दिन तक धूम सें,
यज्ञ–हवन के काम।
रामधुन, सत्संग–भजन,
नितदिन आठो याम।।३०।।

बीचों में घटना घटै,
सुनबै छी फिलहाल।
करें सकें खाढ़ों यहाँ,
श्रोता बहुत सवाल।।३१।।

बाबा के आगू गिरै,
सेवक एक धड़ाम।
बोलै यज्ञ–हवन में,
घीयों के छै काम।।३२।।

पर टीनों में बूँद भर,
घी नैं देखौं आय।
घीयों के जल्दी करों,
बाबा कोय उपाय।।३३।।

बाबा बोलै घी तुरत,
आबी जैतै हाथ।
पर यै में कुछ शर्त्त छौ,
सुनें धैर्य के साथ।।३४।।

लौटाबें होतौ सुनें,
काम–काज के बाद।
भुलैइहैं नैं भूल सें,
शर्त्त राखिहें याद।।३५।।

गिरलै गोड़ों पर तुरत,
झुकलै सबके माथ।
उठलै आशीर्वाद लें,
बाबा केरो हाथ।।३६।।

गंगा मैया सें कहैं,
पैंचा घी दें आज।
लौटैबै जल्दी जहाँ,
पूरन होतै काज।।३७।।

शंकरपुर जौअन्नियाँ,
के एगो इंसान।
दुक्खा मंडल साथ में,
चलै लगैनें ध्यान।।३८।।

बर्त्तन डालै गांग में,
अर्ज करै बन दीन।
गंगा मैया के कृपा,
घी सें भरलै टीन।।३९।।

गर्म कड़ाही में जबें,
टीना उझलै लान।
देखी घी के रंग कें,
सब्भैं लै पहचान।।४०।।

चमत्कार के बात ई,
बाबा के अकबाल।
कठिन समस्या सामनें,
बाबा दै झट टाल।।४१।।

बाद बरारी घाट में,
मूर्त्ति रूद्रावतार।
बाबा बनबाबै करै,
भक्तो के उपकार।।४२।।

घाट रजण्डीपुर जहाँ,
यज्ञ करै के बात।
बाबा ठानी लेलकै,
अवसर तब शिवरात।।४३।।

धुन के पक्का आदमी,
नैं कहियो घबड़ाय।
गोड़ बढ़ाबै जब जहाँ,
वहीं सफलता पाय।।४४।।

एक वार मलमास में,
बाबा छेलै दूर।
ऋषिकुण्डों में भक्तगण,
बड़ी रहै मजबूर।।४५।।

झण्डी गाड़ै के समय,
बाबा के दरकार।
खबर पीरपैंती करौं
ककरा पर दौं भार।।४६।।

खाढ़ों आश्रम लग रहै,
चिन्तित भगवत दास।
चलें पीरपैंती तुरत,
बाबा केरें पास।।४७।।

पहुँची गेलै शाम तक,
बाबा के नजदीक।
बैठै बाबा ध्यान में,
जगह बड़ी समीक।।४८।।

आग्रह भगवत दास के,
बाबा लै सिर धार।
शीघ्र पहुँचना छै वहाँ,
बाबा करै विचार।।४९।।

खाना भगवत दास कें,
बाबा तब खिलवाय।
बोलै गाड़ी झट पकड़,
दिखलाबें चतुराय।।५०।।

देर जरा नैं पहुँचबौ,
पीछू सें ही आय।
भेजै भगवत दास कें,
भली–भाँति समझाय।।५१।।

उतरै भगवत रतनपुर,
पहुँचै जब ऋषिकुण्ड।
देखै खाढ़ों लोग सब,
वहाँ झुण्ड के झुण्ड।।५२।।

बाबा बीचों में रहै,
भरलों रहै उमंग।
कैसें बाबा पहुँचलै,
सोची छेलै दंग।।५३।।

बाबा बोलै कुछ कहाँ,
घबड़ाबै के बात।
हम्में सोचौं ट्रेन सें,
होतै बड्डी रात।।५४।।

तेजी सें पैदल चलौं,
ऐलों तोरों साथ।
चिन्ता छोड़ी प्रेम सें,
बोलों भोले नाथ।।५५।।

अन्यायी अंग्रेज के,
जुल्म करै जब जोर।
देश प्रेम केरों लहर,
मारै हृदय हिलोर।।५६।।

बिहपुर थाना के पुलिस,
खूब करै उत्पात
राजेन्दर बाबू वहाँ,
पहुँचै रातोरात।।५७।।

तखनी अनंतदास जी,
मिललों छेलै जाय।
राजेन्दर बाबू कहै,
बाबा कें मुस्काय।।५८।।

आशीर्वादी चाहियों,
देश हुवें आजाद।
अंग्रेजें हरदम करै,
देशों कें बरबाद।।५९।।

बाबा बोलै स्वप्न में,
कहनें छै श्रीराम।
हिम्मत मत हारों कभी,
होतै काम तमाम।।६०।।

बहुत जल्द आजाद अब,
होतै हिन्दुस्तान।
स्वतंत्रता लेनें यहाँ,
बिराजतै दिनमान।।६१।।

झंडा फहरै सूर्य में,
देश हुवै आजाद।
मिटलै भारत देश के,
लोगों के अवसाद।।६२।।

❖❖❖

सर्ग–आठ

गीत

ऋषिकुण्डो के महिमा अपार भइया
लोग पहुँचें जहाँ बेशुमार भइया।
उच्चों पहाड़ जहाँ बाघ गुर्राबै।
पानी पियासलों सिंह वहाँ आबै।
जीव–जन्तु करै वहाँ विहार भइया।। ऋषि...।

गाछ–बिरीछी देखी मन हर्साबै।
चिड़ियाँ नाची–नाची गीत सुनाबै।
करै पर्यावरण के सम्हार भइया।। ऋषि...।

जुग सें गरम–गरम पानी के झरना।
मनमा मोही लै छै कलकल करना।
सब दुक्खों के करै छै, क्षार भइया।। ऋषि...।

झुमलों ऊपर सें उतरै छै बादल।
झलकै कारों जेना आँखी के काजल।
करै स्वागत गछिया के डार भइया।। ऋषि...।

भुरका वही ठाँ बहै एगो सोता
जे कोय लगाबै सोता में गोता
चर्म रोगें मानी लै हार भइया।ऋषि...।

जमाना सें ऋषि–मुनि ध्यनमा लगाबै।
तपस्या के बलपर परम पद पाबै।
होलै यहाँ योगी उद्धार भइया।। ऋषि...।

चंचल बाबा साथें अनंत बाबा।
ऋषि कुण्ड रहै उनकों कासी–काबा।
वहें छेलै स्वरगों के द्वार भइया।। ऋषि...।

शृंगी ऋषि ऋषिकुण्डों के छेलै।
जकरा सें बेटा दशरथ घर खेलै।
जे करलक शांता सें विवाह भइया।। ऋषि...।

ऋषि कुण्डें बसै छै योगिनी मइया।
सबके मनोरथ करै पूरा मइया।
मेटै कोखी के सब्भे विकार भइया।। ऋषि...।

अंधा, लंगड़ा पहुँचै सब्भे वहवाँ।
मलेमास मासें गाछी के छहवाँ।
दिनरात करै प्रभु सें गुहार भइया।
ऋषि कुण्डों के महिमा अपार भइया।। ऋषि...।

छन्द–चौपाई

ऋषिकुण्डों के अद्‌भुत लीला। कथा मनोहर परम रसीला।
जीव भयानक बाघो ज्ञानी। करै जरा भी नैं मनमानी।
पीठी पर लें घूमै बाबा। नैं कखनूँ ककरो पर धाबा।
चिड़ियाँ चुनमुन–चुनमुन करनें। आबी बैठै बाबा शरणें।

जीव जंगली आज्ञाकारी। बाबा के ई महिल न्यारी।
बाबा सें दीक्षा पावै में, बाबा केरों गुण गाबै में।
ध्यान लगैनें रहलै लोगें। सबकें तारै ध्यानें–योगें।
बदरी दासों कें दै दीक्षा। योगों आरू तप के शिक्षा।

तब बलदेव बनाबै चेला। दोनों तें छेलै अलबेला।
जब तक रहलै वाँही रहलै। दुख–सुख सब्भे बाँटी सहलै।
अन्त समय जब गेलै आबी। ईश्वर के गुण गाबी–गाबी।।
बाबा केरों नाम पुकारी। सब्भे गेलै स्वर्ग सिधारी।

भरत दास तब दीक्षित होलै। मधुर वचन बाबा सें बोलै।
हम्में महदेवा में रहबै। दुख–तकलीफों सब्भे सहबै।
मगर बनैबै ठाकुरबाड़ी। रोक लगैबै दारू–ताड़ी।
स्वर्ग धरा पर होतै जग्घों। बनबै हमेशा एक बग्घों।

सचमुच वोहिनें काम करलकै। बाबा सिर पर हाथ धरलकै।
तिनटंगा, कुरसेला केरों। परबत्ता के जेरों–जेरों।
बाबा केरों आगू आबै। बाबा आगू शीश झुकाबै।
बिन्दा दीरा के हरि दासो। वृन्दावन नैं करलक वासो।

बचपन सें ही फेरै माला। सबदिन ही रहलै मतवाला।
बौकू नरगा मोहनपुर के। सधलों छेलै गल्ला सुरके।
रहै नारदी भजन प्रवीणा। भजन ओकरों मरना–जीना।
दूधैला केरों नेपाली। सत्संगों में रमलै खाली।

कसमावादों केरों सक्कल। ठोस रहै उनकों भी अक्कल।
राम–जानकी ठाकुरवाड़ी। सब्भे रहलै अड्‌डा गाड़ी।
हकरू, मिश्री, मौजी, डोमन। बाबा सेवा में दै तन–मन।
जागेश्वर पर सबसें प्यारा। बाबा केरों बड़ा दुलारा।

रहै बड़ी भारी कीर्तनियाँ। बजबै ढोल, नाल, हरमुनियाँ।
ऋषि कुण्डों में कीर्तन गाबै। एकरात जब वहीं बिताबै।
देखै बाबा लग बाघों कें। कोसै तब अपना भागों कें।
काँपै डर सें थर–थर–थर–थर। आँखी में आँसू भी भर–भर।

बाघ गोड़ बाबा के चूमै। बाबा के साथें ही घूमै।
जागेश्वर कें तब समझाबै। माथा केरों भूत भगाबै।
निर्भय हों यहाँ पर चेला। यहाँ कहाँ छै जरा झमेला।
जीव–जीव सब एक यहाँ पर। मोंन रमाबों जहाँ–जहाँ पर।

जागेश्वर के मन बहलाबै। होशों में जागेश्वर आबै।
एकवार विशनपुर दियारा। बाबा पहुँची डालै डेरा।
यज्ञ कराना सेवक चाहै। बाबा देखी मन में आहै।
खर्चा–बर्चा होतै भारी। नैं अखनी कुच्छू तैयारी।

लोग इलाका के सब जगलै। जी–जानों सें यै में लगलै।
बनै यज्ञशाला अति सुन्दर। पण्डित जूटै बड़ा धुरंधर।
आहुति पड़ै वहाँ खीरों के। जलै वन गोइठा दीरों के।
यज्ञ स्थल पर बड़ा इनारा। पानी लेली वहें सहारा।

दू ठो मटकुइयाँ बनबाबै। मेला दुनिया भर लगबाबै।
बढ़लै कुछ मगर परेशानी। सुखलै कुइया केरों पानी।
मचबै हाहाकार वहाँ जब। चिन्तित लागे लोग वहाँ सब।
सब बाबा सें अरज सुनावै। तब बाबा कुछ भेद बताबै।

मनाबें कमला महारानी। बोहीं देतौ तेरा पानी।
आमंत्रण में गलती करलें। अपना सिर पर बोझा धरलें।
लानें फूल–सुपाड़ी, चावल। लें ले थोड़ा सा दुर्बादल।
तुलसी दल नैं भूली जइहें। मारकीन कपड़ा भी लइहें।

जखनी सरमजाम सब जुटलै। बाबा धीरें–धीरें उठलै।
बाबा बोलै कमला मैया। जल्दी पार लगाबों नैया।
माफ करों गलती बच्चा के। दिखलाबों युग छै सच्चा के।
धूप–दीप–नैवेद्य चढ़ावै। कुइयाँ पर कपड़ा ओढ़ाबै।

आधा घंटा केरों अन्दर। उमड़ी पड़लै वहाँ समंदर।
यज्ञ सफल होलै मनभावन। जग्घों ऊ बनलै अति पावन।
यज्ञ के सामान जे बचलै। रामधुन ओकरा सें मचलै।
बैकुण्ठपुर–दुधैला बगले। वहाँ सत्संग छेलै लगले।

मेंहीं बाबा लगलों छेलै। लेकिन लोग वहाँ नैं गेलै।
मेंहीं बाबा चिन्तित होलै। चिन्ता सें सारा तन डोलै।

अनन्त बाबा के लग गेलै। ध्यान मग्न बाबा तब छेलै।
बाबा बाबा मनसें मिललै। हृदय–कली दोनों के खिललै।

मेंहीं दास विषय पर आबै। सत्संगों के हाल सुनावै।
अनन्त बाबा बात बताबै। मेंहीं बाबा कें समझावै।

करनें छों काम मेहींनिया। जकरा सें भागै छै दुनिया।
मोटों काम अगर अपनैभें। तबें सफलता निश्चित पैभें।

रामधुनी के शोर मचाबों। झाल–झांझरी, ढोल बजाबों।
मेंहीं बाबा कें बतलाबै। मेंहीं बाबा अर्ज सुनाबै।

सत्संगों लें समय निकालों। सबकें अपना रंगें ढालों।
वातावरण बदलतै पूरा। नैं तें रहतै काम अधूरा।

अनंत बाबा पाँव धरलकै। रामधुनी आरंभ करलकै।
अनन्त बाबा के मनसूबा। उमड़ी पड़लै भीड़ अजूबा।

राम–जानकी मंदिर सेवा। सें बाबा कें मिललै मेवा।
एक सौ आठ दिन तक रहलै। सत्संगों के धारा बहलै।

रोजे भोग, लगाबै चन्दन। देवी–देवों के अभिनंदन।
जगलै पूरा लोग वहाँ के। धरती बंजर रहै जहाँ के।

❖❖❖

सर्ग–१

नाथनगर के क्षेत्र में,
जगह एक रमनीक।
बसलों साहबगंज छै,
गंगा के नजदीक।।१।।

ठाकुरबाड़ी भव्य छै,
वही जगह पर आज।
गंगोत्री समुदाय के,
जकरा ऊपर राज।।२।।

कथा–कहानी ऊ जगह,
बनलों छै बेजोड़।
जहाँ दियारा क्षेत्र में,
बाबा धरलक गोड़।।३।।

दूधैला केरों निकट,
छेलै शाहाबाद।
अगल–बगल बैकुण्ठपुर,
वहाँ–वहाँ अवसाद।।४।।

बाबा घूमै गाँव–घर,
जमा करै कुछ लोग।
गामों के गणमान्यगण,
सें माँगै सहयोग।।५।।

दीरावासी सें कहै,
करों यहाँ कुछ काम।
स्वर्ग बनाबों क्षेत्र कें,
अमर यहाँ के नाम।।६।।

रहतै जैठाँ साधुजन,
होतै ऊ निर्माण।
साधु–संत के साथ ही,
दीरा के कल्याण।।७।।

अनंत बाबा के कहौं,
व्यक्तित्व के प्रभाव।
जगलै जन गणमान्य सब,
सब में जगलै चाव।।८।।
होय इकट्ठा लोग सब,
करलक सोच–विचार।
फेनूँ चन्दा में लगै,
घूमै द्वारे–द्वार।।९।।

मजदूरी पर बोझ दै,
नितदिन आना चार।
तीन रुपैया होॅर पर,
नैं ज्यादा कुछ भार।१०।।

लोगों के सहयोग सें,
चन्दा होलै ढेर।
बढ़िया कामों में भला,
केना लगतै देर।११।।

नेपाली मंडल रहै,
गामों के सिरताज।
उनका पर गणमान्य कें,
छेलै पूरा नाज।१२।।

राम–जानकी नाम सें,
लें जमीन समझाय।
चन्दा उनका पास में,
जमा करलकै जाय।१३।।

नेपाली मंडल रहै,
भक्ति भाव में लीन।
हुनी रायपोखर जहाँ,
कीनै जाय जमीन।१४।।

अट्ठारह बीघा कहों,
लम्बा–चौड़ा ठीक।
गाँव–मुहल्ला पास में,
कुल्हड़िया नजदीक।१५।।

राम–जानकी नाम सें,
मगर निबंधन कार्य।
नैं होलै जे लोग लें,
छेलै कुछ अनिवार्य।१६।।

राम–जानकी नाम सें,
अड़चन–वाधा देख।
काम रोकना ठीक नैं,
बदली गेलै लेख।१७।।

नेपाली के नाम सें,
सुनी निबंधन भाय।
बढ़िया–बढ़िया लोग भी
तब गेलै घबड़ाय।१८।।

लोग पहुँचलै द्वार पर,
आपत्ती के संग।
देखी तीनों भाय कें,
मन में बड़ा उमंग।१९।।

नेपाली, घुघली रहै,
रहै अमासी साथ।
तीनों कोनों काम में,
सदा बँटावै हाथ।।२०।।

नेपाली बड़का कहों,
घुघली छोटों भाय।
रहै अमासी बीचला,
तीन्हूँ साथें खाय।।२१।।

फनूँ निबंधन बात पर,
होलै सोच–विचार।
नेपाली मंडल रहै,
लिक्खै लें तैयार।।२२।।

लिखा–पढ़ी के दौर में,
लगै वर्ष दू–चार।
बाइस बीघा दौं लिखी,
लेलक माथा भार।।२३।।

कागज–पत्तर ठीक कर,
जब निश्चित सब कोय।
राम–जानकी नाम सें,
लिखा–पढ़ी तब होय।।२४।।

अनंत बाबा की कृपा,
स्वीकारै समुदाय।
केना थकतै लोग सब,
बाबा के गुण गाय।।२५।।

देखों साहबगंज के,
ठाकरबाड़ी आज।
कैसें बनलों छै सुनों,
यै में बड़का राज।।२६।।

मूर्त्ति वीर हनुमान के,
जहाँ कंपनी बाग।
लें जाना छेलै वहाँ,
पर जग्घों के भाग।।२७।।

गिरलै साहबगंज में,
गाड़ी सें हनुमान।
सुखलों बरगद पेड़ लग,
जे छेलै सुनसान।।२८।।

नैं उठलै हनुमान जी,
करलक कोटि उपाय।
अपनों–अपनों भाग्य पर,
छेलै सब पछताय।।२९।।

बाबा भी ठहरै वहाँ,
जहाँ वीर हनुमान।
बाबा कें कोनों जगह,
करना छेलै ध्यान।३०।।

वही राह सें कचहरी,
चललै महेश घोष।
केश–मुकदमा के रहै,
मन में भी अफसोस।।३१।।

करै नमन शंकर सुवन,
तब बाबा लग जाय।
हाथ जोड़ विनती करै,
बोलै कष्ट बुझाय।।३२।।

माथा ऊपर हाथ रख,
बाबा दै आसीस।
निश्चित छौ तोरों विजय
कृपा करौ जगदीश।।३३।।

विजयी होलै घोष सच,
ऐलै बाबा पास।
लड्डू लेनें हाथ में,
तन–मन में उल्लास।।३४।।

बाबा लड्डू कें जरा,
नैं ताकै इकवार।
भाव बुझलकै घोष जी,
होलै झट तैयार।।३५।।

बोलै हमरों ई जगह,
जमीन जे अनमोल।
मंदिर लेली दान में,
दौं हम्में दिल खोल।।३६।।

बाबा कल हमरा घरें,
राखों अपनों पैर।
धन्य–धन्य होतै धरा,
नैं समझों कुछ गैर।।३७।।

कल्हे बन्दोवस्त भी,
करबै जमीन जाय।
बाबा तों साथें रही,
लें जमीन लिखवाय।।३८।।

होना जे छेलै वहें,
होलै सच्चा भाय।
शुभ मुहुर्त्त, शुभ–शुभघड़ी,
बन्दोवस्त कराय।।३९।।

मंदिर के निर्माण में,
लगलै जे सब लोग।
हरि मंडल, नरसिंह के,
पूरा ही सहयोग।।४०।।

लालजीत, जगदम्ब भी,
लगलै रहलै साथ।
ताले मंडल भी वहाँ,
खूब बँटाबै हाथ।।४१।।

राम–जानकी साथ में,
लक्ष्मण केरों स्थान।
औढरदानी पार्वती,
वहीं वीर हनुमान।।४२।।

बाबा के अद्‌भुत कृपा,
मंदिर स्वर्ग समान।
साधु–संत बैठी वहाँ,
खूब लगाबै ध्यान।।४३।।

पाँचो देखनहार जे,
पैसा वाला लोग।
बढ़िया–बढ़िया काम में,
करै रहै सहयोग।।४४।।

हरि मंडल एन.जी.ए.,
विद्यालय दै खोल।
शिक्षा केरों क्षेत्र में,
काम बड़ा अनमोल।।४५।।

ई सब बढ़िया काम सें,
मन में भरै उमंग।
पन्नूचक के लालजित,
देखी रहलै दंग।।४६।।

यज्ञ भवन बनवाय के,
लेलक मोंन बनाय।
रामों के दरवार भी,
देलक तुरत सजाय।।४७।।

अन्दर एक्के साल के,
शिव–गौरी हनुमान।
जकरा चाहों सब वहीं,
करों हमेशा ध्यान।।४८।।

बाबा अनंत दास की,
जय बोलो सब कोय।
नाव पार मझधार सें,
दया दृष्टि जब होय।।४९।।

❖❖❖

सर्ग–दस

जे राम–जानकी गंगोत्री
ठाकुरबाड़ी छै सुन्दर।
वहाँ यज्ञ के धूम समैलै,
सब्भै के मन के अंदर।।१।।

यज्ञ वहाँ पर करलों गेलै,
मूर्त्ति वहाँ बावन बनलै।
यज्ञों बीचें वहाँ जरूरत,
तखनी घीयों के पड़लै।।२।।

गंगा सें पैचो दिलबाबै,
बाबा अनंत दासें नें।
बदलै वातावरणें वैजाँ,
घी के सुन्दर वासेंनें।।३।।

गंगा सें घी माँगे वाला,
खेसाड़ी यादव तखनी।
साथ रहै जागेश्वर जी भी,
दोनों नैं रहलै अखनी।।४।।

तिरानवे तक कथा कहानी,
खूब सुनैंनें छै हुनियें।
अखनी अनंत बाबा पासें,
गेलै छोड़ी कें दुनियें।।५।।

राघोपुर में यज्ञ करावै,
बाबा धूमों–धामो सें
परिचित रहै इलाका वासी,
बाबा केरों नामों सें।।६।।

घी यज्ञों में घटना–बढ़ना,
बाबा केरों लीला छै।
उनखै सें सब पूरा होना,
बातो बड़ी रसीला छै।।७।।

महदेवा ठाकुरवाड़ी में,
देवी कें बैठाबै लें।
गंगा लेगी गेलै तखनी,
आशीर्वादो पाबै लें।।८।।

मरगंगा पारें गंगा छै,
मुश्किल पार उतरना छै।
बाबा छै जब साथों में तब,
भक्तों कें की डरना छै।।९।।

बाबा सौ सें अधिक आदमी,
लेनें अपना साथों में।
पैदल गंगा में जब घुसलै,
जीवन गंगा हाथों में।।१०।।

बूढ़ा एगो छूटलै पाछू,
जहाज देखै आबै छै।
बूढ़ा कें जल्दी अपना लग,
बाबा तुरत बुलाबै छै।११।।

ई लीला आँखी सें देखै,
बूढ़ा, जवान, बच्चा नें
आँचों कें टारी देनें छै,
सब दिन एन्हैं सच्चा नें।१२।।

पूजा–पाठ करलकै, तखनी,
बाबा गंगा पारों में।
बाबा कें दर्शन दै खातिर,
ऐलै गंगा धारों में।१३।।

ई लीला बाबा तक रहलै,
बाबा के महिमा न्यारी।
गंगा सिर पर धारै हरदम,
श्री गंगाधर त्रिपुरारी।१४।।

नाविक बौला पार करै लें,
बाबा कें तब नावों सें।
रहै प्रभावित बाबा पूरा,
नाविकों के प्रभावों से।१५।।

ऐलै लौटी महदेवा तब,
प्राण–प्रतिष्ठा करबावै।
अनन्त बाबा की जय बोलो,
झूमी–झूमी सब गाबै।१६।।

सुलतानगंज के घाटों के,
चमत्कार भी जानी लें।
मल्लाहा सब बड्डी दुर्जन,
छेलै तखनी मानी लें।१७।।

बाबा कें नैं पार उतारै,
बोलै टेढ़ों जानी कें।
बाबा दै छै दण्ड वहाँ पर,
ऊ नाविक अभिमानी कें।१८।।

बाबा पैदल पार उतरलै,
नाव पार नैं लागै छै।
रातों भर गंगा के बीचें,
तभिये नाविक जागै छै।१९।।

घाटों पर के लोग अचम्भित,
नाव किनारा आबै नैं।
मल्लाहा जी–जान लगाबै,
मगर पार तब पाबै नैं।।२०।।

बाबा गंगा कें पूजी कें,
आगू कदम बढ़ावै छै।
घाटों पर के मल्लाहा तब,
दौड़ी आगू आवै छै।।२१।।

बाबा के चरणों पर गिरलै,
आँसू आँखी में भरलों।
बाबा नैया पार लगाबों,
सब तोरे छेखौं करलों।।२२।।

बाबा केरों कृपा–दृष्टि सें,
नाव किनारा लागै छै।
नावों पर केरों जनता के,
तकलीफे सब भागै छै।।२३।।

नावों सें उतरी मल्लाहा,
गिरलै गोड़ों पर आबी।
लोग हजारो धन्य वहाँ पर,
बाबा के दर्शन पाबी।।२४।।

जयमंगल टोला राघोपुर,
के बीचें वैष्णव काली।
जूटै गामों के महिला सब,
लेनें पूजा के थाली।।२५।।

पर मैया कें सब्नैं मानै,
भैंसा–बकरा के आदी।
यै पीछू धन–संपत केरों,
पूरा छेलै बरबादी।।२६।।

महारूद्र यज्ञो धूमों सें,
बाबा वैठाँ करबाबै।
बाबा सब्भै के नजरों में,
अब्बल दर्जा में आबै।।२७।।

जब बाबा राघोपुर गेलै,
गेलै काली प्रांगण में।
तब देखै छै महिका गड़लों,
लम्बा–चौड़ा आंगन में।।२८।।

महिका यानी मलकाठों के,
साफ–साफ मतलब जानी।
अनन्त बाबा के आँखी में,
देखै सब भर–भर पानी।।२९।।

गामों केरों श्रैष्ठ व्यक्ति तब,
आबी बाबा सें बोलै।
बाबा आँसू केरों कारण,
सबलोगों लेगीं खोलै।।३०।।

काली मैया वैष्णव छेकै,
इनका आगू बलि देना।
ई तें छेकै महापाप सें,
आफत माथा पर लेना।।३१।।

भैंसा–बकरा काटी–काटी,
पूरा पाप कमाना छै।
ई लोकों सें ऊ लोकों तक,
जीवन में पछताना छै।।३२।।

गौवाँ आबी बोलै बाबा !
बात यहाँ जों मानै छी।
काली मैया के मनसूवा,
हम्में सब नैं जानै छी।।३३।।

भैंसा–बकरा नैं देला पर,
आग बबूला ऊ होतै।
उनकों क्रोधों में आबी कें,
छाती पीटी सब रोतै।।३४।।

अभी फुलाइस राखों हमरा,
बलि आगू नैं देना छै।
मैया के मनसूवा अखनी,
सबकें जानी लेना छै।।३५।।

अगर फुलाइस होतै तभिये,
वैष्णव काली मानी कें,
बलिदानों कें सब ठुकरैबै,
मन में निश्चिय ठानी कें।।३६।।

बाबा गौमूत्रों सें सिंचित,
काली मंदिर कें करलक।
नेम–ठेम सें वहाँ फुलाइस,
मैया के आगू धरलक।।३७।।

होलै अहिनों वहाँ फुलाइस,
सब नाचै झूमी–झूमी।
काली मैया की जयबोलै,
मंदिर कें घूमी–घूमी।।३८।।

बलिदानों के बाते टललै,
जय मैया वैष्णव काली।
मैया के हाथों में अखनी,
सब लोगों के रखवाली।।३९।।

एक वार भण्डारा बाबा,
अपना हाथो सें करलक।
बीस–बीस मन पूड़ी खातिर,
आटा लानी कें धरलक।।४०।।

तइयो लोगों केरों चिन्ता,
भीड़ों कें देखी बढ़लै।
बादल उमड़ी–घुमड़ी गरजै,
चिन्ता में सब्भे पड़लै।।४१।।

पर भंडारा लग पानी के,
एक्को बूँद कहाँ गिरलै।
सब्भैं खैथैं–पीथैं रहलै,
आसन ककरों नैं हिललै।।४२।।

बचलों सामानों के लेखा,
नैं रहलै कुछ जानी लें।
अभियो हजार लोग खैतियै,
अघैतियै सब मानी लें।।४३।।

बाबा द्वारा ढेरी जगहाँ,
यज्ञ करैलों गेलों छै।
पर अभाव कोनों चीजों के,
कहियो कुछ नैं भेलों छै।।४४।।

बाबा के दयनीय अवस्था,
आबी माथा पर नाँचै।
तइयो बाबा घूमी–घूमी,
उपदेशो सगरे बाँचै।।४५।।

अहिनों हालत में भी बाबा,
घूमें गेलै जब काशी।
स्वास्थ्य बिगड़लै पत्नी केरों,
जे दर्शन के अभिलाषी।।४६।।

बाबा केरों आसन डोलै,
पत्नी आँखी में आबै।
धीरज राखै लेली बाबा,
अपना मन कें समझाबै।।४७।।

राह घरों के पकड़ी लै छै,
आबै उड़लों गामों में।
लोग उमड़लै दर्शन लेली,
जे–जे फसलों कामों में।।४८।।

आँगन में जब लात घरलकै,
सब्भैं शीश झुकाबै छै।
आशीर्वादों साथें बाबा,
अपनों झांझ बजाबै छै।।४९।।

मरनासन पर रहै चौरिया,
उठलै हिम्मत बान्ही कें।
पतिदेवों के पैर परवारै,
लोटा–पानी लानी कें।।५०।।

आँचल सें पोछै गोड़ों कें,
माथों राखै गोड़ों पर।
रहै चौरिया जीवन केरों,
खाड़ों अंतिम मोड़ों पर।।५१।।

बिस्तर पर लेटाबै बाबा,
बोलै 'धर्म परायण छों।'
तोहीं सीता–सावित्री छों,
गीता छों, रामायण छों।।५२।।

कहै चौरिया पतिदेवों सें,
अपनाँ हाथें दें पानी।
गलती सारा माफ करी दें,
हम्में छेलों अज्ञानी।।५३।।

पानी पीबी बाबा हाथें,
देवी स्वर्ग सिधारै छै।
पाठक कहतै ऊ जग्घा पर,
के जीतै, के हारै छै।।५४।।

धूम–धाम सें श्राद्धों साथें,
रामधुनी करबाबै छै।
रही चौरिया सदा सुहागिन,
समुचित सद्गति पाबै छै।।५५।।

❖❖❖

सर्ग–ग्यारह

रूग्न अवस्था बाबा केरों,
कामों के नैं अंत।
मोंन रमाबै जनहित में नित,
अहिनों बाबा संत।।१।।

चलै पुर्णियाँ के नवहट्टा,
थर–थर करै शरीर।
तिनटंगा के ठाकुरबाड़ी,
में कुछ हुवै अधीर।।२।।

देहों में ताकत नैं रहलै,
उठै जरा नैं गोड़।
लाचार करै कुछ दर्द बढ़ी,
जहाँ–जहाँ पर मोड़।।३।।

सेवक सब बाबा कें लेनें,
बिन्दा दीरा जाय।
कल्याण टोला में आदमी,
कें देलक गच्छाय।।४।।

दर्शन लेली लोग उमड़लै,
बदली गेलै साज।
काल पूर्णिमा कार्तिक केरों,
चतुर्दशी छै आज।।५।।

कुच्छू दिन आरू जीयै लें,
लोगें करै उपाय।
मकरध्वज लानी बाबा कें,
दै छै वहाँ पिलाय।।६।।

दवा खाय आबै होशों में,
कार्तिक लागै पार।
रहै पूर्णिमा दिन बाबा के,
छोड़ै के संसार।।७।।

बाबा लाठी लें कें दौड़ै,
तों सब बड्डी नीच।
टालें हमरों मृत्यु के तिथि,
ऐलें हमरा बीच।।८।।

मौन भंग बाबा के होलै,
नैं रहलै कुछ बोध।
काम बिगाड़ी देथैं छै सब,
आबी–आबी क्रोध।९।।

बाबा लगलै रामधुनी में,
जपतें रहलै नाम।
भजन–भाव सें ही सम्हरै छै,
बिगड़ै वाला काम।१०।।

रात पूर्णिमा के ही छेलै,
चिन्ता सब बेकार।
बड़ा सबेरे त्यागी गेलै,
बाबा ई संसार।।११।।

आठ बजे के बाद पैरवा,
करनें रहै प्रवेश।
अहिनों संतों पर आश्रित छै,
हमरों भारत देश।।१२।।

बीस सौ चार विक्रम संवत,
सदी बीसवीं जान।
अनुराधा नक्षत्र सुहावन,
उगलों छेलै भान।।१३।।

रहै शरद ऋतु जाही वाला,
अब ऐतै हेमंत।
शीत–लहर उमतैलै जाड़ों,
जैतै कहाँ तुरंत।।१४।।

उन्नीस नवम्बर सैंतालिस,
दिन छेलै बुधवार।
बाबा केरों भव–सागर सें,
नैया होलै पार।।१५।।

ठाकुरबाड़ी के प्रांगन में,
बाबा केरों लाश।
राखी जय–जयकार करै सब,
गूंजै तब आकाश।१६।।

नर–नारी, बच्चा, बूढ़ा के,
ऐलै जब जामात।
होलै बाबा के देहों पर,
फूलों के बरसात।१७।।

शव यात्रा बाबा के अद्‌भुत,
लम्बा लगभग कोस।
संकीर्त्तन के बीच–बीचमें,
बाबा के जयघोष।१८।।

पावन भूमि कल्याण टोला,
सें यात्रा प्रारंभ।
धूप–दीप–नैवैद्य चढ़ाना,
भी होलै आरम्भ।१९।।

बरियारपुर बाजार, स्टेशन,
आशा टोला जाय।
चौकों पर सें ठाकुरवाड़ी,
लानै फनूँ घुमाय।।२०।।

बाबा के कहला अनुसारें,
जन्म–भूमि के पास।
नजदीक केरों गंगा तट पर,
जलना छेलै लाश।२१।।

परम कर्मठ शिष्य जमुनाजी,
द्वारा आरति होय।
वेद ध्वनि, वैदिक मंत्रों सें,
दाह कहै सब कोय।।२२।।

गंगा भैया के धारा में,
डाली पूरा भस्म।
दाह–संस्कार केरों सब्भे,
पूरा होलै रश्म।।२३।।

काशी जी सें पंडित आबै,
श्राद्ध कार्य लें भाय।
अबधपुरी सें प्रवचनकर्ता,
नीति–धर्म समझाय।।२४।।

ऐलै दूर–दराजों सें सब,
सम्प्रदाय के संत।
मंदिर–ठाकुरबाडी केरों,
जुटलै यहाँ महंत।।२५।।

श्राद्ध कार्य में कोनों त्रुटि नैं,
ज्ञानी–पंडित साथ।
भोजों भण्डारा में छेलै,
साधु–संत के हाथ।।२६।।

नाम–गुणों में जानी लें तों,
बाबा रहै अनंत।
गंगोत्री समुदायों केरों,
सूरज लागै अंत।।२७।।

ऐलों–गेलों महंथ द्वारा,
होलै बड़ा विचार।
महदेवा ठाकुरबाड़ी के,
जमुना ऊपर भार।।२८।।

श्री राम–जानकी गंगोत्री,
ठाकुरबाड़ी खास।
साहेबगंज, भागलपुर कें,
थाम्है जमुना दास।।२९।।

उँगराचक, ऋषिकुण्ड समेते,
सब जग्घों के भार।
जमुना दासों पर थोपी कें,
गल्ला डालै हार।।३०।।

ढाई रुपया मन चावल तब,
बिकै रहै बाजार।
दू रुपया मन गेहूँ तइयो,
खर्चा साठ हजार।।३१।।

बाबा केरों पुण्यतिथि पर,
बाजै ढोलक, झाल।
आयोजन नवरात्र, रामधुन,
होथैं छै हर साल।।३२।।

बाबा अनंत दास अमर छै,
अमर करलका काम।
अहिनें सब संतों के कारण,
भारत के छै नाम।।३३।।

बाबा अनंत दासों केरों,
देलों जे उपदेश।
जीवन कें सानन्द बनाबै,
काटै सबठो क्लेश।।३४।।

प्रातः काल ब्रह्म मुहुर्त्त में,
जागों पहला कर्म।
नित पूजा, ध्यान आराधना,
करना समझों धर्म।।३५।।

पर धन कें पत्थर मानी लें,
थोड़ों में संतोष।
घातक छै सब्भै के लेली,
सदा खजाना–कोष।।३६।।

धर्म कार्य में तत्पर रहना,
त्यागी अत्याचार।
जीवन कें ही नर्क बनाबै,
लूट–पाट व्यभिचार।।३७।।

जीवन कें ही नष्ट करै छै,
अहंकार–अभिमान।
अभिमानी सें दूर रहै छै,
दुनिया में भगवान।।३८।।

बाबा के उपदेश उतारों,
जीवन में सबलोग।
स्वस्थ रहै के लेली नितदिन,
करों ध्यान–तप–योग।।३९।।

अनंत बाबा के जय बोलों,
जय–जय भारत देश।
साधु–संत, ऋषि–मुनि के दाता,
हमरों अंग प्रदेश।।४०।।

❖❖❖

हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र' : एक परिचय

जन्म : 06/09 /1950, कटहरा, सुलतानगंज, (भागलपुर)

सम्मान/पुरस्कार/उपाधि :

1. डॉ0 अम्बेदकर फेलोशिप, राष्ट्रीय सम्मान (05/12/2001) (दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली)
2. खूब लाल महतो स्मृति पुरस्कार (उत्तंग हमरों अंग लेली) (अ0 भा0 अंगिका साहित्य कला मंच) (09/06/2001)
3. जगदीश पाठक मधुकर– कुल विभाकर (05/05/2002) (समय साहित्य सम्मेलन, पुनरिया, बाँका)
4. इन्दिरा देवी स्मृति सम्मान (12/08/2003) (बरियारपुर, मुंगेर)
5. जनार्दन बाबू रजत स्मृति सम्मान (08-09/11/2003) (अ0भा0 अंगिका साहित्य कला मंच, खगड़िया)
6. पंडित गोपी नाथ तिवारी पुरस्कार (25/12/2005) जाह्नवी अंगिका संस्कृति संस्थान, पटना
7. सरला स्मृति साहित्यकार सम्मान (अंगप्रिया के सफल सम्पादन लेली) जानकीपुर पचई (बाँका) (09/12/2007)
8. गोपाल प्रसाद सिंह सेवा निवृत प्र0 अ0 स्मृति सम्मान (बाबा दूबे भयहरण स्थान सलेमपुर, अमरपुर (बाँका) 8 मार्च 2008)
9. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र रजत स्मृति सम्मान ('ठकहरा' लेली) (15/06/2008) (हिन्दी भाषा साहित्य परिषद्, खगड़िया)
10. पंडित जगदीश पाठक मधुकर, काव्य साहित्य साधना स्मृति सम्मान (भागलपुर प्रमण्डलीय अ0भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन)
11. स्व0 वैकुण्ठ विहारी स्मृति सम्मान (तारापुर, मुंगेर)
12. राहुल सांकृत्यायण स्मृति सम्मान (21 फरवरी2010) अन्तर्राज्य सद्भावना बहु–भाषी काव्योत्सव, उधाडीह, भागलपुर
13. आदिकवि सरहपा स्मृति सम्मान (11 अप्रैल 2010) अ.भा. अंगिका साहित्य कला मंच सरहपापुरम्, कहलगाँव
14. जय प्रकाश मोदी स्मृति सम्मान (14 मार्च 2011) कवि रत्न (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ)
15. हास्य शिरोमणि सम्मान। 9.5.13 महादेवपुर (अमरपुर) बाँका।
16. भगीरथ बाबा अंग साहित्य सम्मान। 01.02.2014, अखिल भारतीय अंगिका साहित्य विकास समिति
17. माहताब अली रजत स्मृति सम्मान। 09.0302914 भावांजलि लेली, हिन्दी भाषा साहित्य परिषद् खगड़िया।
18. उमानाथ पाठक स्मृति सम्मान। 30.03.2014 अजगवी नाथ साहित्य मंच, सुलतानगंज

19. गौतम बुद्ध राष्ट्रीय सम्मान 2019
राजगीर महोत्सव, राजगीर (बिहार)
20. तिलका मांझी राष्ट्रीय सम्मान 2019
अंग मदद फाउण्डेशन, तुलसी मिश्र लेन (चंपानगर)
1. कवि रत्न (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ)
2. अंग श्री (अ0 भा0 भाषा साहित्य सम्मेलन प्रमंडलीय शाखा, भागलपुर)
3. अंग श्री (क्षेत्रीय सर्वभाषा कवि सम्मेलन, खड़िया, मुंगेर)
4. साहित्य श्री (अ0 भा0 भाषा साहित्य सम्मेलन, भोपाल)
5. साहित्य रत्न (मंगनी लाल स्मृति ट्रस्ट, बौंसी, बाँका)
6. अंग शिरोमणि (राज्य स्तरीय सर्व भाषा सद्भावना काव्योत्सव, उधाडीह, भागलपुर)
7. कवि शिरोमणि (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, गाँधीनगर, ईशीपुर, भागलपुर)
8. पंचशील शिरोमणि (पंचशील चैरिटेबुल सोसायटी, 25/4 कड़कड दुम्म एरिया,
सेंट्रल बैंक के ऊपर, नई दिल्ली 110 092–भारत)
9. अंग–पतंग (अ0भा0 अंगिका साहित्य सम्मेलन, जिला शखा–भागलपुर)
10. अंगिका सपूत (अ0भा0 अंगिका साहित्य कला मंच प्रखण्ड शाखा–शंभुगंज)
11. महाकवि– (विक्रमशिला हिन्दी विद्या पीठ)
12. अंग सपूत (23/10/2016)
सर्वांगीण विकास परिषद् झारखण्ड राज्यान्तर्गत के0 का0 ऊर्जा नगर, महागामा
13. साहित्य रत्न 26 जनवरी 2020
क्रांतिशील बुद्धिजीवी साहित्यमंच बरियारपुर (मुंगेर)

प्रशस्ति (ढेर साहित्यिक संस्था द्वारा)

देश–विदेश के स्तरीय पत्रिका में रचना प्रकाशित आरु आकाशवाणी भागलपुर तथा दूरदर्शन पटना से अँगिका आरू हिन्दी रचना संप्रसारित

शैली–विसंगति में हास्य खोजी कें व्यंग्य प्रहार करना।

महामंत्री– अखिल भारतीय अँगिका साहित्य कला मंच।

सम्प्रति–सम्पादक– मंजिल / अंगप्रिया/देवायतन

सम्पर्क – ग्राम+पो0–कटहरा, सुलतानगंज (भागलपुर)–813213

मो0–9931854246